ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

फाल्गुन-चेत संवत् नानकशाही ५५२-५३ मार्च 2021 वर्ष १४ अंक ७

गुरुद्वारा किला होलगढ़ साहिब

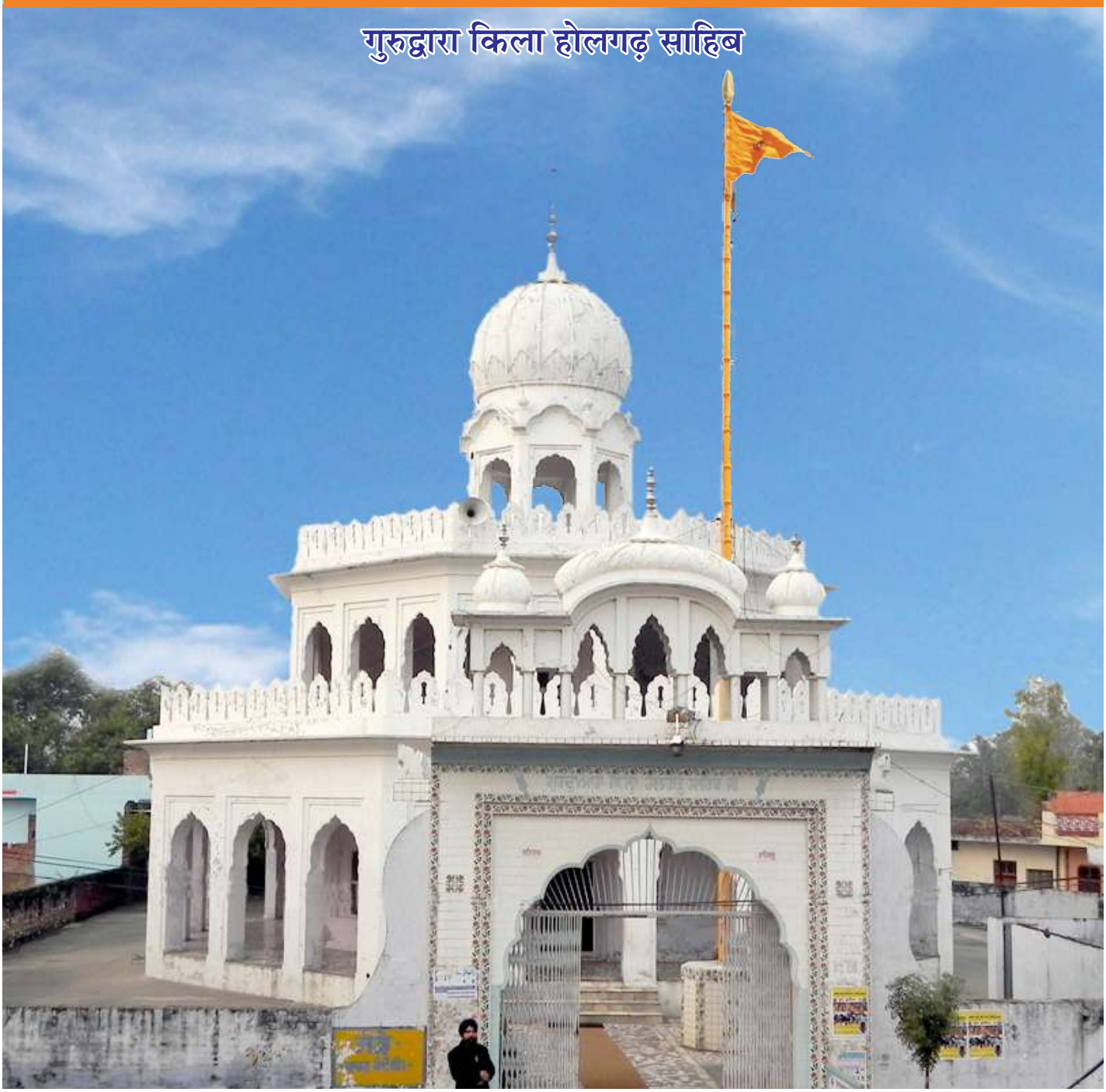

भाई सुबेग सिंघ और भाई शाहबाज़ सिंघ को शहीद किए जाने का दृश्य

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

फाल्गुन-चेत, संवत् नानकशाही 552-53
वर्ष 14 अंक 7 मार्च 2021

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब- 143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 6
श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब . . . 8
– डॉ. परमवीर सिंघ
गुरसिक्खी के आदर्श : भाई मरदाना जी 12
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
. . . भाई सुबेग सिंघ-भाई शाहबाज़ सिंघ 17
–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
. . . सरदार बघेल सिंघ 21
– डॉ. (कर्नल) दलविंदर सिंघ
. . . अकाली फूला सिंघ 27
–डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल
खालसाई त्यौहार : होला महल्ला 29
– स. दलजीत सिंघ
जिसहि निवाजे सो जनु सूरा 32
–डॉ. परमजीत कौर
सिक्ख धर्म में गुरुआई परंपरा 35
–डॉ. तेजिंदर पाल सिंघ
धंनु सु ग्रिहु जितु प्रगटी आइ ॥ 44
–डॉ. मनजीत कौर
ख़बरनामा 48

गुरबाणी विचार

चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा ॥
संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥
जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा ॥
इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥
जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥
सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥
जिनी राविआ सो प्रभू तिंना भागु मणा ॥
हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना ॥
चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा ॥२ ॥ *(पन्ना १३३)*

पंचम सतिगुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में चेत्र मास की ऋतु और इससे संबंधित क्रियाओं के बारे में सांकेतिक वर्णन करते हुए मनुष्य-मात्र को मनुष्य जीवन रूपी वर्ष के इस काल-खंड को प्रभु-नाम-चिंतन-मनन द्वारा सफल करने का निर्मल उपदेश देते हुए गुरमत मार्ग बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि चेत्र मास में मालिक परमात्मा को स्मरण किया जाए तो बहुत ही गहरी प्रसन्नता मिलती है। यदि इस समय अच्छे मनुष्यों की संगत करते हुए जिह्वा से प्रभु-नाम जपा जाए तो मालिक स्वामी प्राप्त हो जाते हैं। जिसने ऐसा सुकर्म कर प्रभु को पा लिया है उसी मनुष्य का इस संसार में आना सफल गिना जाए, चूंकि मनुष्य-जीवन का मूल प्रयोजन यही है :

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥ *(पन्ना १२)*

गुरु पातशाह हर एक क्षण प्रभु-नाम को समर्पित करने का दिशा-निर्देश बख्शिश करते हुए फरमान करते हैं कि परमात्मा की पावन स्मृति के बगैर यदि एक पल भी जीया जाए तो सारा जीवन ही व्यर्थ हो जाता है। जो परमात्मा जल में, आकाश में, धरती पर व्याप्त हो रहा है, यदि ऐसा मालिक मनुष्य को याद ही न आए तो उसका कितना दुर्भाग्य होगा! दूसरी ओर जिन्होंने परमात्मा को याद किया है वे बहुत ही भाग्यशाली अथवा महान हैं। ऐसे सुजनों को देखकर मन

परमात्मा के दीदार की कामना करता है, मन में उसके दीदार की प्यास बनी रहती है। चेत्र मास में जो मुझे परमात्मा से मिला दे मैं उसके चरण छू लूँ!

बारह माहा मांझ की पहली पावन पउड़ी, जिससे यह पावन बाणी प्रारंभ होती है, इस प्रकार है :

किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम॥
चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम॥
धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम॥
जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम॥
हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम॥
जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम॥
स्रब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ खाम॥
प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम॥
नानक की बेनंतीआ करि किरपा दीजै नामु॥
हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिस का निहचल धाम॥१॥ *(पन्ना १३३)*

अर्थात् हे परमात्मा! हम अपने कर्मों की कमाई के अनुसार अर्थात् सुकर्मों को निभाने में कुछ कमी रह जाने के कारण आपसे बिछड़े हुए हैं। सनम्र विनती है कि आप अपनी कृपा कर हमें अपने साथ मिला लो। चारों दिशाओं में भटकने के उपरांत हम अंत में आपकी शरण में आए हैं। दूध देने से रहित गाय किसी काम नहीं आती। जल न मिले तो वृक्ष अथवा पौधा सूख जाता है। यदि असल मित्र-प्रभु का नाम ही न मिल पाया तो आराम कहां? जिस हृदय रूपी घर में प्रभु-पति नहीं प्रकट होते वह हृदय रूपी घर भट्ठी जैसा दुखदायक प्रतीत होता है। प्रभु मालिक के बिना मनुष्य रूपी स्त्री का सारा शृंगार व्यर्थ है अथवा बाहरी दिखावे के सभी प्रयास निष्फल हैं। मालिक के बिना बाहरी रूप से मित्र दिखने वाले सभी जन शत्रु हैं। ऐसी स्थिति में हृदय से एक ही विनती निकलती है कि हे स्वामी! कृपा कर अपना नाम प्रदान कर दो। हे मालिक! मुझे अपने साथ मिला लेना, क्योंकि एक आप ही का नाम सदैव स्थिर है।

संपादकीय

नई मानसिकता का आगाज़ : होला महल्ला

गुलामी अर्थात् पराधीनता मानव-मन को अपनी जकड़ में लेकर उसे जलालत भरी ज़िंदगी जीने के लिए विवश कर देती है। गुलाम मनुष्य के जीवन व समाज का स्तर हर प्रकार के विकास का बाधित होता है। पंद्रहवीं सदी में मनुष्य की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सभ्याचारक तथा मानसिक गुलामी के विरुद्ध श्री गुरु नानक देव जी द्वारा ज़ोरदार आवाज़ बुलंद की गयी। इन गुलामियों ने मनुष्य को इतना निर्बल कर दिया था कि उसने विवशतापूर्ण इन परिस्थितियों में ही विचरण करना सीख लिया। सदियों से गुलामी झेलते हुए हिंदुस्तानी इसके आदी होकर गुलामी को ही अपनी तकदीर मानने लग गए थे। उस समय हिंदुस्तान के लोगों को शस्त्र धारण करने, घुड़सवारी करने तथा दसतार सजाने आदि की सख्त मनाही थी। दसतार केवल वही सजा सकता था जिसको बादशाह की तरफ से ऊँचे पद (स्थान) प्रदान किये गये होते थे। घुड़सवारी करना, निशान, नगाड़ा तथा फौज रखना हुकूमत के विरुद्ध बगावत समझी जाती थी तथा उल्लंघन करने वाले की सज़ा मृत्यु एवं घर-बार को उजाड़ दिया जाता था। यही कारण था कि आम लोग चुपचाप ज़ब्र झेल रहे थे, कोई भी हुकूमत के अत्याचार के विरुद्ध मुंह नहीं खोलता था।

इस गुलामी की जिल्लत भरी जिंदगी में से भारतवासियों को निकालने के लिए गुरु साहिबान ने भरपूर प्रयत्न किए। गुरु साहिबान ने हिंदुस्तान के लोगों के सोए हुए स्वाभिमान को जगाकर उनके मन में चढ़दी कला का एहसास पैदा करने हेतु यहां मनाए जाते त्योहारों को खालसाई रूप दिया। १७५६ बिक्रमी के वैसाखी वाले दिन 'पांच प्यारों' को तैयार कर उनके माध्यम से 'खालसा पंथ' की सृजना कर लोगों को शस्त्रधारी होने के लिए प्रेरित किया। इसी तरह चेत वदी प्रथम, संवत् १७५७ बिक्रमी वाले दिन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने होलगढ़ नामक स्थान पर पहली बार 'होली' के स्थान पर 'होला-महल्ला' मनाकर सिक्खों को शस्त्र चलाने में मुहारत हासिल करने की ओर प्रेरित किया।

इसके बाद 'होला-महल्ला' सिक्खों के लिए अहम दिवस बन गया। यह दिवस आज भी होली से अगले दिन बहुत ही श्रद्धा-भावना से मनाया जाता है। गुरु साहिब ने होली के परंपरागत रूप को रद्द कर दिया चूंकि इस दिन लोग एक-दूसरे पर गंदगी फेंकने, बुरे वचन बोलने, शराब पीकर हुल्लड़बाज़ी करने जैसी हरकतों को ही होली का अंग समझने लग गए थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस त्योहार को नये रूप में मनाने के लिए इसका नया नाम 'होला-महल्ला' कर दिया। 'पंजाबी लोकधारा विश्व कोश' के अनुसार 'महल्ला' शब्द अरबी भाषा के शब्द 'महल्ले' का तद्भव रूप है, जिससे आशय उस स्थान से है, जहां फ़तह प्राप्त करने के उपरांत ठिकाना किया जाता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने होला-महल्ला वाले दिन सिंघों के दो दल बनाकर आपस में मनसूई (नकली) युद्ध करने की रिवायत को जारी किया। एक दल किला होलगढ़ पर काबिज़ हो

जाता था, दूसरा दल उस पर नकली युद्ध करके किले को छुड़ाने की कोशिश करता था। इस तरह से जंगबाज़ी की युक्तियां तथा पैंतरेबाज़ियां सीखी एवं सिखाई जाती थीं। युद्ध के नगाड़े बज उठते, शस्त्रों के टकराने की आवाज़ पहाड़ियों में गूंज उठती, जैकारों से आसमान गूंज उठता, अंत को फ़तह की खुशी मनाते सिंघों के जत्थे सड़कों पर निकल आते। पहले 'महल्ला' शब्द इसी भाव के लिए प्रयोग किया जाता रहा। धीरे-धीरे यह शब्द उस जलूस के लिए प्रचलित हो गया जो फ़तह के उपरांत फौजी सजधज कर एवं नगाड़ों की चोट पर निकालते हैं। होला-महल्ला के नगर कीर्तन की प्रथा आज भी प्रचलित है। इन सबके पीछे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की वह दूरंदेशी सोच थी जो गुलामी तथा हुकूमती ज़ब्र के विरुद्ध उत्साह पैदा करने की पूर्ण योग्यता रखती है।

विदेशी सरकारों की तरफ से सिक्खों के इस उत्साह को कम करने की अनेक योजनाएं बनाई गईं परंतु गुरु के सिक्ख अपने गुरु द्वारा दी गई सिक्ख परंपराओं पर पूरी दृढ़ता से पहरा देते हुए शहीदी प्राप्त करते रहे। १९१९ ई. को वैसाखी वाले दिन अंग्रेज़ों ने सैकड़ों भारतीयों को जलियां वाला बाग में शहीद कर दिया। २७ मार्च, १९२६ को होली वाले दिन ६ बब्बर अकालियों को फांसी के तख्ते पर लटका कर शहीद कर दिया गया। भारी कष्टों को सहन करते हुए सिक्ख हमेशा पंथ एवं देश की चढ़दी कला के लिए कार्य करते रहे।

समाज में फिर से बहुत-सी बुराइयां तथा कुरीतियां नया रूप धारण कर प्रचलित हो चुकी हैं। आज का मनुष्य दिन-प्रतिदिन इन कुरीतियों के प्रभाव की गुलामी झेल रहा है। आज फिर से ज़रूरत है जागृत होने की, इकट्ठा होकर बुराइयों के विरुद्ध युद्ध करने की। हमारे सामने मादा भ्रूण-हत्या, नशे, नंगेज़, प्रदूषण, विदेशी हमले, मातृ-भाषा का त्याग, विदेश में जाने का रुझान, सभ्याचारक संगीत में गिरावट आदि जैसी अनेक समस्याएं मुंह आड़े खड़ी हैं। इन बुराइयों के विरुद्ध लड़ने के लिए गांव-गांव, शहर-शहर में लोगों को जागृत करना पड़ेगा ताकि इन बुराइयों का विरोध करने वाले हर जगह पर गुरु साहिबान की शिक्षा के मुताबिक सुंदर समाज सृजित करने के लिए तैयार-बर-तैयार रहें। बुराइयों के मुकाबले के लिए हमें अपनी पुरातन परंपराओं से प्रेरणा लेकर समस्याओं को जड़ से उखाड़ने का प्रयत्न करना चाहिए ताकि होला-महल्ला पर गुरु साहिबान द्वारा हमें दिया गया संदेश सार्थक हो सके। इन कार्यों के लिए हमें अपने पास के गुरुद्वारा साहिबान में संगती रूप में दीवान आयोजित कर भरपूर प्रयत्न करने चाहिए। कई गांव वाले मिलकर साझी जगह पर ऐसी कोशिश कर सकते हैं। बच्चे देश-कौम का भविष्य होते हैं। छोटे बच्चों को प्रेरणा देकर उनकी ज्यादा से ज्यादा शमूलियत इन समागमों में करवानी चाहिए। गांवों-महल्लों में खेल-मेले, गुरमत समागम आदि आयोजित कर लोगों को बुराइयों के विरुद्ध जूझने के लिए प्रेरित करें! इस तरह हम गुरमति विचारधारा की दिशा पर चलकर पंथक आन-शान तथा जाहो-जलाल से होला-महल्ला मनाकर मानवता की सेवा में अपना बनता योगदान दे सकते हैं। आधुनिक समय में होला-महल्ला की मौलिक भावना को पुन : उजागर करने की बहुत आवश्यकता है।

श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब का 400 वर्षीय प्रकाश पर्व कैसे मनाएं?

*- डॉ. परमवीर सिंघ**

श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब के प्रकाश पर्व की चौथी शताब्दी इसी वर्ष मई माह की पहली तारीख को आ रही है। इससे पहले वर्ष २०२० में भाई तारू सिंघ जी का ३०० वर्षीय जन्म दिवस, भक्त नामदेव जी का ७५० वर्षीय जन्म दिवस, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और शिरोमणि अकाली दल का शताब्दी वर्ष आदि मना चुके हैं। ये शताब्दी पर्व भूत काल में घटी घटनाओं की याद दिलाने के साथ-साथ भविष्य में अच्छी जीवन-युक्ति धारण करने पर ज़ोर देते हैं।

वैसाख वदी ५, १६७८ बिक्रमी (१ अप्रैल, १६२१ ई.) को प्रकाशमान हुए श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब के समय श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी मुगलों के साथ संघर्ष करते हुए आत्मसम्मान की भावना पैदा करने के लिए यत्नशील थे। १६२८ ई. में शाहजहान के तख़्त पर बैठने के पश्चात् १६३५ ई. तक श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब और मुग़ल फौज के बीच चार युद्ध हुए और इन सब में गुरु जी ने विजय प्राप्त की थी। इसी समय के दौरान शाही सैनिकों के ज़ुल्म और गुरु साहिब की उदारवादी नीति सामने आती है। गुरु जी दूसरे धर्मों का सम्मान करते थे और इसी उद्देश्य के अधीन ही उन्होंने श्री हरिगोबिंदपुर में मुसलमानों के लिए मस्जिद बनवाई थी। दूसरी तरफ़ लाहौर के मुग़ल कर्मचारियों ने काबुल की सिक्ख संगत द्वारा गुरु जी के लिए लाए गए दो घोड़े छीन लिए थे। ये दोनों घटनाएं दर्शाती हैं कि किस तरह हाकिम श्रेणी आम लोगों की लूटमार कर रही थी और दूसरी तरफ़ गुरु साहिब अपने पूर्वजों द्वारा आरंभ किए परोपकार के उद्देश्य पर दृढ़तापूर्वक कार्य कर रहे थे। गुरु साहिब समाज में कुछ ऐसे आदर्श स्थापित कर रहे थे जो समाज को सुचारू रूप में चलाने का कार्य करते हैं।

श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब की जन्म शताब्दी मनाते समय उन आदर्शों का ध्यान रखने की ज़रूरत है जिनकी स्थापि के लिए उन्होंने लम्बी प्रचार-यात्राएं की थीं और अंततः अपनी शहादत दे दी थी। श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब शान्ति के पुंज थे, इसी लिए वे हर संभव प्रयत्न करने पर ज़ोर देते थे, जो समाज में शान्ति की स्थापना करने के लिए लाभदायक सिद्ध हो। आसाम की ऐतिहासिक घटना सबके सामने है, जिसमें गुरु साहिब दिल्ली के बादशाह और असम के स्थानीय हाकिमों के मध्य संधि करवाने के लिए आगे आए थे। दूसरी तरफ़ जब गुरु जी को यह

*सिक्ख विश्व कोश विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला—१४७००२ फोन : ९८७२०-९४३२२

सूचना मिलती है कि उत्तरी भारत में हुकूमत की तरफ से जबरन धर्म-परिवर्तन पर ज़ोर दिया जा रहा है तो वे शीघ्र ही पंजाब वापिस आकर मालवा क्षेत्र के कई गाँवों में प्रचार-यात्रा कर आम लोगों को धर्म के मार्ग पर दृढ़ रहने को प्रेरित करते हैं। जब कश्मीर के ब्राह्मण गुरु जी के पास श्री अनंदपुर साहिब आते हैं तो वे उन्हें कहीं और जाने की सलाह नहीं देते, बल्कि ''भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन'' वाली धर्म की भावना दृढ़ करने का जो संदेश देते थे, उसी पर दृढ़तापूर्वक पहरा देने के लिए आगे आते हैं। गुरु जी का ब्राह्मणों के साथ कोई धार्मिक रिश्ता नहीं था, क्योंकि वे मूर्ति-पूजा की जगह एक अकाल पुरख की बंदगी करने पर ज़ोर देते थे, परन्तु वे यह नहीं चाहते थे कि किसी का जबरन धर्म-परिवर्तन किया जाये। धार्मिक आज़ादी की भावना पैदा करने का जो सफल यत्न गुरु साहिब ने किया था आज उसी सिद्धांत को दोबारा लागू करने की आवश्यकता है। धर्म के आधार पर किये जाने वाले किसी भी भेदभाव के विरुद्ध गुरु जी की ओर से उठाई गई आवाज़ को बुलंद रखने वाले संदेश को परिपक्व करवाने के लिए यत्न होने चाहिए।

हर गुरुपर्व को मनाने के लिए रिवायती समागम आयोजित किये जाते हैं, जैसे : नगर कीर्तन, कीर्तन दरबार, ढाडी दरबार, कवि दरबार, कथा समागम आदि। पुरातन पीढ़ी इसे अच्छी तरह समझती है और नयी पीढ़ी भी इन समागमों में हाज़िरी लगवाने में फख्र महसूस करती है। पिछले दिनों श्री फ़तिहगढ़ साहिब में छोटे साहिबज़ादों और माता गुजरी जी के शहीदी समागम के दौरान बड़ी संख्या में नौजवानों की शमूलियत मीडिया कर्मियों का ध्यान खींच रही थी। नौजवानों में अपने इतिहास और धार्मिक परंपराओं के बारे में जानने की रुचि कौम की चढ़दी कला का प्रतीक है।

रिवायती मुहावरा बड़ी संख्या में संगत को प्रभावित करता है जिसमें से जन-चेतना प्रकट होती है। इसके साथ यह बात भी याद रखनी चाहिए कि कहीं हमारे रिवायती समागम केवल रिवाज बन कर ही न रह जाएँ और धर्म-अर्थ हेतु दिए गए धन में से 'अपनी अक्ल बिगानी माया' वाले मुहावरे का दिखावा न होने लगे। रिवायती समागमों के अलावा अकादमिक स्तर पर किये जाने वाले सेमिनार, विचार-गोष्ठियां एवं कान्फ्रेंसें भी गुरु जी के संदेश को दृढ़ करवाने में सहायक होती हैं। हर पीढ़ी में धर्म को समझने का अलग-अलग दृष्टिकोण होता है। विद्वानों ने सिक्ख धर्म के जो सैद्धांतिक दृष्टिकोण तैयार किये हैं उन्हें आम लोगों तक ले जाने की आवश्यकता है। नये युग की समस्याओं के सम्मुख धर्म के प्रति की गई व्याख्या नौजवानों को प्रभावित करती है और वे अपने धार्मिक विश्वास तथा सिद्धांतों के प्रति और ज्यादा सजग होते हैं। अकादमिक कार्यों के माध्यम से विचार-चर्चा का मार्ग खुलता है और कई नये दृष्टिकोण सामने आते हैं, जिनके आधार पर नये आविष्कारों के प्रति रुचि पैदा होती है।

नयी पीढ़ी में मूल ग्रंथों को पढ़ने की कम

होती जा रही रुचि चिंता का विषय है, जिससे कई समस्याएँ भी पैदा हो रही हैं। इन्टरनेट पर लंबा समय तक काम करने वाले अपने धर्म और विरासत से संबंधित प्रश्नों के उत्तर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से ढूँढने के लिए यत्नशील रहते हैं। इस मीडिया के माध्यम से वही जानकारी सामने आती है जो किसी ने इसमें दर्ज की हो। यदि कोई जानकारी धर्म के मापदण्डों या गुरमत सिद्धांत के अनुसार सही नहीं है तो वह गलत रूप में ही लोक-मन में पक्की हो जाती है और मन में परिपक्कव विचारों को दुरुस्त करना कई बार असंभव हो जाता है। हमारी धार्मिक संस्थाओं को मीडीया की तरफ विशेष ध्यान देने तथा सोशल मीडिया पर ऐसी जानकारी डालने की और ज्यादा आवश्यकता है जो गुरमत सिद्धांतों के अनुकूल हो। सिक्ख संस्थाओं) को इस तरफ़ विशेष ध्यान देकर गुरबाणी, गुरु-इतिहास और सिक्ख इतिहास के प्रमाणिक तथ्यों को आम लोगों तक पहुँचाने के लिए यत्नशील होना चाहिए।

श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब की कर्म-भूमि का अधिकांश रूप भारत में ही मौजूद है। गुरुआई के पश्चात् गुरु जी ने बाबा बकाला से बिहार, बंगाल, असाम तक जो प्रचार-यात्राएं की थीं, उनका सर्वेक्षण करवाए जाने की आवश्यकता है, ताकि पंजाब से बाहर दूसरे राज्यों से भी गुरु जी के चरण-स्पर्श प्राप्त स्थानों के बारे में जानकारी एकत्रित की जा सके। १९८४ ई. के बाद बहुत-से सिक्खों को घर से बेघर होना पड़ा। जिन गुरुधामों की वे सेवा-संभाल करते रहे थे, उनकी मौजूदा स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता है। गुरुधामों की सेवा-संभाल कर रही शख़्सियतों का विशेष सम्मान होना चाहिए।

दूसरे राज्यों में कुछ ऐसे गुरुधाम मौजूद हैं जिनका प्रबंध उदासियों के पास था और उनके साथ लगती ज़मीनों पर इलाके के अन्य लोग काबिज़ हो गए हैं। ऐसे स्थानों की खोज कर उनके पुनर्रुत्थान के लिए यत्न करने चाहिए। जो गुरुधाम स्थानीय संगत ने संभाल कर रखे हुए हैं उनके साथ संपर्क करने की आवश्यकता है और जहाँ तक संभव हो सके उनके नुमायंदों से समस्याओं संबंधी जानकारी प्राप्त कर यथाशक्त उनकी मदद करने के लिए आगे आने में ढील नहीं करनी चाहिए। हमारे प्रचारकों को, विदेशी प्रचार-यात्राओं के साथ-साथ भारत के उन हिस्सों में भी प्रचार- यात्राएं करनी चाहिए जहाँ सिक्ख जनसंख्या बहुत कम है और जहां गुरुधामों की सेवा-संभाल करनी मुश्किल हो रही है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी से संगत को बहुत-सी आशाएं हैं, परन्तु इसकी अपनी सीमाएं भी हैं। पंजाब की अन्य संस्थाओं को भी इस कार्य के लिए आगे आना चाहिए। भारत के दूसरे राज्यों के दूर-दराज के इलाकों में सुशोभित गुरुधामों की संभाल के लिए इन्हें यत्नशील होने की आवश्यकता है। यदि सामूहिक यत्न न किये गए तो वह दिन दूर नहीं जब हम गुरुद्वारा गिआन गोदड़ी, गुरुद्वारा मंगू मठ, गुरुद्वारा गुरू डांगमार

आदि स्थानों पर घटित हो रही घटनाओं के कारण अपने गुरु साहिबान के चरण-स्पर्श प्राप्त स्थानों से वंचित हो जायेंगे।

श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब से संबंधित एक बहुत ही महत्वपूर्ण गुरुधाम ढाका में सुशोभित है। यह वो स्थान है जहाँ गुरु जी को पटना साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रकाश की ख़बर मिली थी। यहाँ से गुरु जी ने पटना साहिब की संगत के नाम हुकमनामे भी लिखे थे। यह स्थान बहुत ही ख़स्ता हालत में है। चाहे गुरुद्वारा साहिब की कुछ ज़मीन खाली करवाई गई है, मगर अभी भी और यत्न करने बाकी हैं। गुरुद्वारा साहिब की समूची ज़मीन को खाली करवा कर पुरातन इमारत को संभाल लिया जाना चाहिए। बंगला देश की सरकार और बंगला देश गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सहयोग से उस स्थान के रखरखाव के लिए यत्न करने चाहिए।

सन् १९७५ ई. में श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब की शहादत से सम्बन्धित तीसरी शताब्दी पूरबी भारत में बहुत बड़े स्तर पर मनाई गई थी। हर राज्य में सुशोभित गुरुधामों में गुरु साहिब की शिक्षाओं का प्रचार करने के लिए विशेष रागी, ढाडी, प्रचारक साहिबान आदि भेजे गए थे। जिन गुरुधामों में ज्यादा सिक्ख संगत मौजूद नहीं थी, वहाँ भी विशेष समागमों का आयोजन कर आम लोगों के मन में श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब की शिक्षा के प्रति चेतना पैदा की गई थी। मौजूदा समय में बहुत-से बच्चे पढ़-लिख गए हैं, परन्तु उनमें ज्यादतर बच्चे गुरमुखी अब भी नहीं जानते। उनके लिए स्थानीय भाषाओं में ऐसा साहित्य पहुंचाने की आवश्यकता है, जिसमें से गुरु जी के जीवन और बाणी से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त होती हो।

सिक्ख स्रोतों और परंपरा में श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब को 'धर्म की चादर', 'सृष्टि की चादर' नाम से याद किया जाता है। गुरु साहिब ने धर्म की आज़ादी के लिए अपना शीश भेंट कर दिया था, जिसका तात्पर्य था कि हर मनुष्य अपने धर्म के जीवन-मूल्यों के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करे। इस दृष्टि से हमें अपने धर्म के श्रद्धालुओं की तरफ भी नज़र मारने की आवश्यकता है कि कहीं वे सिक्खी से दूर तो नहीं जा रहे? पतितपन तो नहीं बढ़ता जा रहा? नशों और कन्या भ्रूण-हत्या की भावना तो पैदा नहीं हो रही? धर्म राजनीति के अंकुश के नीचे तो नहीं दब गया? कहीं हमारी सिक्खी ओहदों तक ही तो नहीं सिमटती जा रही? नम्रता और सेवा को सिक्खी की जड़ माना गया है। इसके आधार पर कार्य करने में हम कितने सफल हुए हैं? आदि...। इसी दृष्टि से विश्लेषण करते हुए इस शताब्दी को मनाने के लिए अभी से ही यत्न आरंभ कर देने चाहिए।

गुरसिक्खी के आदर्श : भाई मरदाना जी

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

श्री गुरु नानक साहिब की महिमा भाई मरदाना जी की चर्चा के बिना सम्पूर्ण नही होती। भाई मरदाना जी श्री गुरु नानक साहिब की धर्म-यात्राओं में न केवल उनके सह- यात्री थे, बल्कि धार्मिक मूल्यों की स्थापना में उनके संदेशवाहक भी बने। भाई मरदाना जी की रबाब ने जहां गुरु साहिब की बाणी को सुर दिये वहीं गुरु साहिब के संग ने उनमें निरंतर हो रहे अंतर विकास ने संसार के सच को देखने में सहायता की। भाई मरदाना जी की आत्मिक श्रेष्ठता तो उसी दिन सिद्ध हो गई थी जब उन्होंने अपने परिवार, समाज के मोह से ऊपर उठ कर श्री गुरु नानक साहिब के साथ धर्म-यात्राओं में जाने का निर्णय लिया था। मनुष्य सब कुछ छोड़ सकता है किन्तु अपने घर, परिवार से दूरी सहन नहीं कर पाता। यह माया का सबसे सबल बंधन होता है जिसे तोड़ना सरल नहीं होता। भाई मरदाना जी ने श्री गुरु नानक साहिब के लिये ये बंधन उस समय तोड़े जब श्री गुरु नानक साहिब अपना मिशन आरंभ करने जा रहे थे। अभी संसार के सामने उनकी महिमा का प्रकट होना बाकी था। निश्चित रूप से भाई मरदाना जी की अंतर अवस्था इतनी जाग्रत थी कि वे उस समय श्री गुरु नानक साहिब के अंदर ईश्वरीय रूप के दर्शन कर पाये थे और घर, परिवार के मोह से मुक्त हो सके थे, अन्यथा वे सुखपूर्वक घर में रहते हुए जीवन व्यतीत कर सकते थे। इसे श्री गुरु नानक साहिब की कृपा भी कह सकते हैं जो भाई मरदाना जी पर हुई और वे धर्म के मार्ग पर सहर्ष चल पड़े। श्री गुरु नानक साहिब ने उनके मन को निर्मलता प्रदान की जिससे वे गुरु साहिब को समर्पित हो गये। श्री गुरु नानक साहिब ने उनकी रबाब को गुणवान बनाया जिससे वह रूहानी सुरों का सागर बन गई। हजारों मील की यात्रायें, दुर्गम व भयावह मार्ग, अपरिचित लोग, अनजान नगर, भिन्न-भिन्न भाषाएं व संस्कृतियाँ और नित्य नई चुनौतियां, फिर भी श्री गुरु नानक साहिब के संग चलते जाना भाई मरदाना जी के चरित्र का वह पक्ष है जो उन्हें विलक्षण बनाता है। एक यात्रा समाप्त हुई तो दूसरी यात्रा को तैयार हो गये। दूसरी यात्रा पूरी हुई तो तीसरी यात्रा के लिये आगे आ गये। उनका समस्त जीवन श्री गुरु नानक साहिब को समर्पित रहा।

ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार भाई मरदाना जी, जो श्री गुरु नानक साहिब के जन्म-स्थान

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४१७८-५२८९९*

राय भोय की तलवंडी के ही रहने वाले थे और आयु में उनसे दस वर्ष बड़े थे, गुरु साहिब के सम्पर्क में सन् १४८० ई. में आये थे। तब से अपने अंतिम समय सन् १५३४ तक वे श्री गुरु नानक साहिब के ही होकर रहे।५४ वर्ष का यह काल भाई मरदाना जी के पूर्ण समर्पण, विश्वास और सेवाभाव को परिभाषित करने वाला काल था। श्री गुरु नानक साहिब जब तलवंडी छोड़ कर सुलतानपुर लोधी आ गये उस समय भाई मरदाना जी भी काफी समय तक सुलतानपुर लोधी आकर उनके सानिध्य में रहे थे। श्री गुरु नानक साहिब का आध्यात्मिक रूप उनके बाल्यकाल में तलवंडी में ही प्रकट होने लगा था। इसी कारण गांव का जमींदार राय बुलार उनके प्रति प्रेम और श्रद्धा रखने लगा था और सदैव गुरु साहिब के पिता भाई महिता कलिआण दास जी को समझाता भी था। भाई मरदाना जी भी इससे अनभिज्ञ नहीं थे। उन्हें श्री गुरु नानक साहिब के संग में सुख का अनुभव होता था। उन्होंने सदैव श्री गुरु नानक साहिब की बात को हुक्म की तरह लिया और कभी पीछे नहीं हटे। भाई मरदाना जी को संसार का भ्रामक और नाशवान रूप दिखने लगा था। वे जान गये थे कि सद्गुणों को धारण कर ही इससे बचा जा सकता है। कलियुग काम-वासना, विकारों से भरे बर्तन जैसा है जिसे पीकर बुद्धि स्थिर नहीं रहती। इसके प्रभाव में लोग क्रोध, मोह और अहंकार से भर गये हैं। चारों ओर धोखे और लोभ का राज्य है, जिससे लोगों का जीवन पल-पल पतन की गर्त में जा रहा है। भाई मरदाना जी पर श्री गुरु नानक साहिब की दया-दृष्टि हुई और उन्हें मुक्ति का मार्ग मिल गया :

करणी लाहणि सतु गुड़ु सचु सरा करि सारु॥
गुण मंडे करि सीलु घिउ सरमु मासु आहारु॥
गुरमुखि पाईऐ नानका खाधै जाहि बिकार॥

(पन्ना ५५३)

श्री गुरु नानक साहिब की कृपा से कोटि-कोटि लोगों का उद्धार हुआ था। गुरु की महिमा ही अद्भुत फल देने वाली है— *''बिखु से अंम्रित भए गुरमति बुधि पाई॥ अकहु परमल भए अंतरि वासना वसाई॥''* जब गुरु की कृपा होती है विष भी अमृत बन जाता है और अज्ञानी भी महाज्ञानी तथा बुद्धिमान बन जाता है। निरर्थक वनस्पति जैसा मनुष्य भी चन्दन के वृक्ष जैसा बन जाता है और उसके अंदर गुण भरने लगते हैं।

उपरोक्त वचन, जो 'सलोक मरदाना १' के शीर्षक से अंकित हैं, में कहा गया है कि मनुष्य अपने सत् कर्मों की भट्ठी बनाये, जिसमें सच का शोधन कर सार निकाले। भाई मरदाना जी यह भी मर्म जान गये थे कि गुरु की शरण में जाकर ही आत्मिक प्रेरणा और बल मिलता है जिससे सारे विकार नाश हो जाते हैं। यही श्री गुरु नानक साहिब के प्रति उनके प्रेम और समर्पण का आधार था। श्री गुरु नानक साहिब तो परमात्मा

स्वरूप और आत्मिक बल का स्रोत थे। उनके लिये कोई भी मिशन, कोई भी कार्य असंभव या कठिन नहीं था। उनके संग रहना किसी सांसारिक मनुष्य के लिये निश्चय ही कठिन से कठिन था। भाई मरदाना जी ऐसा कर सके तो श्री गुरु नानक साहिब की कृपा से। श्री गुरु नानक साहिब ने उन्हें यह महानता दी जिससे वे आत्मिक निर्मलता और बल प्राप्त कर सके थे। भाई मरदाना जी की बाणी के अनुसार जैसा संसार है वैसा ही मनुष्य का तन है। मनुष्य का तन ऐसे बर्तन की तरह है जिसमें विकारों का मद भरा हुआ है। मन की तृष्णा और वासना उसे यह 'मद' पीने को उकसाती है। इससे मनुष्य की बुद्धि भटक जाती है और काल उसे ऐसा नाशकारी 'मद' पिलाने को तैयार रहता है। उसके विकार प्रबल होते जाते हैं और वह पाप-कर्मों में लिप्त होता जाता है। गुरु के ज्ञान, परमात्मा के गुण-गायन, परमात्मा के भय और सच को जीवन का आधार बनाने से ही आत्मिक तृप्ति होती है। जब आत्म-चेतना जाग्रत हो जाये तब मनुष्य का मन परमात्मा के प्रेम-रस से भर जाता है और अमृत जैसी पवित्र भावनाएं प्रवाहित होने लगती हैं। जो तन, मन विकारों को आगे बढ़ा रहा था वही विकारों से दूर हो परमात्मा और सद्गुणों में लग जाता है । यह मात्र परमात्मा का नाम जपने से संभव हो पाता है। गुरमति की इस अनोखी राह को बड़ी ही सुन्दरता और सूक्ष्मता से प्रकट किया गया है। परमात्मा की महिमा और स्तुति से जिससे मन का विश्वास दृढ़ होता है। मनुष्य के उद्धार में मनुष्य का कोई योगदान नहीं है, क्योंकि परमात्मा ही परम शक्ति है और ज्ञान का भंडार है। वह संसार में सृजन, पोषण और विनाश तीनों ही शक्तियों का स्वामी है। उसकी महिमा का वर्णन कोई नहीं कर सकता। वह स्वयं ही अपने गुण और बल प्रकट करता है। उसका रूप कण-कण में है।

आपे जोगी आपे भोगी आपे संनिआसी फिरै बिबाणी॥

आपै नालि गोसटि आपि उपदेसै आपे सुघड़ु सरूपु सिआणी॥

आपणा चोजु करि वेखै आपे आपे सभना जीआ का है जाणी॥ *(पन्ना ५५३)*

परमात्मा तप, गृहस्थ, सन्यास सभी अवस्थाओं में प्रकाशमान है। वह प्रश्न व शंका में भी है और उपदेश व समाधान में भी है। वह सामर्थ्य, सौंदर्य और बुद्धि का सागर है। परमात्मा अन्तर्यामी है और सारी सृष्टि की सार लेने वाला है। संसार का खेल-तमाशा उसी का रचा हुआ है, जिसे वह आनन्द-भाव से देख रहा है। भाई मरदाना जी बेशक सांसारिक व्यक्ति थे और उनकी सांसारिक चिंताएं थीं, किन्तु श्री गुरु नानक साहिब ने उनकी सारी चिंताएं मिटा कर उन्हें अचिंत कर दिया था। प्रिंसिपल सतबीर सिंघ के अनुसार, जब श्री गुरु नानक साहिब ने भाई मरदाना जी को संग रहने को कहा तो भाई

मरदाना जी ने बड़ी विनम्रता से कहा कि ''वे मिरासी हैं और बड़ी कठिनाई से दो वक्त की रोटी जुटा पाते हैं। यदि उनके साथ चले तो परिवार के भूखे मरने की स्थिति आ जायेगी। वे समय से नमाज भी नहीं पढ़ पायेंगे। इससे उनके लोक और परलोक दोनों ही बिगड़ेंगे।'' श्री गुरु नानक साहिब ने कहा कि ''तुम्हारी यह चिंता अज्ञानता के कारण है। रक्षा करने वाला और भोजन देने वाला तो परमात्मा है। रोजा और नमाज़ भी परमात्मा के दिए हुए आशीर्वाद हैं। परमात्मा संतों, भक्तों के मन में निवास करता है। केवल उसकी भक्ति ही सहायक है। अंत में कोई और सहायक नहीं होता।'' श्री गुरु नानक साहिब ने भाई मरदाना जी से कहा कि ''निश्चित ही उनके साथ चलने में दुख हैं। यदि वे सांसारिक सुख चाहते हैं तो परिवार के पास लौट जायें।'' श्री गुरु नानक साहिब का यह उपदेश भाई मरदाना जी के मन में बस गया था। उन्होंने श्री गुरु नानक साहिब से कहा कि उनकी सारी शंकाएं दूर हो चुकी हैं और वे साथ चलने को तैयार हैं:

प्रभु जी त्रिसना मन ते मूकी।
आन जानि की आसा चूकी।
तुम समान को नदरि न आवै।
दिनकर पिख खद्योत न भावै।

(श्री गुर नानक प्रकाश)

भाई मरदाना जी ने श्री गुरु नानक साहिब से कहा कि आप जैसा कोई और मुझे संसार में दिखाई नहीं दे रहा है। मेरे मन के सारे भ्रम खत्म हो गये हैं। भाई मरदाना जी ने बहुत ही महत्वपूर्ण बात कही कि उन्होंने सूरज की रौशनी देख ली है, इसलिए उन्हें अब जुगनू की रौशनी कैसे भा सकती है! यह भावना एक श्रेष्ठ अवस्था वाले मनुष्य में ही जन्म ले सकती थी। निश्चित ही वे घर, परिवार की चिंता से ऊपर उठ चुके थे और परमात्मा के विश्वास से भर गये थे।

कहते हैं कि श्री गुरु नानक साहिब की पहली धर्म-प्रचार यात्रा के बाद जब भाई मरदाना जी तलवंडी लौटे तो उनके परिवार-जनों, बच्चों ने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की, किन्तु भाई मरदाना जी ने उन्हें समझाया। वे पश्चिम एशिया की यात्रा के लिये श्री गुरु नानक साहिब के साथ पुनः चल दिये। यह श्री गुरु नानक साहिब के लिये उनका अतुल प्रेम और अटूट समर्पण था। यदि उन्हें पहली यात्रा में कोई असुविधा हुई होती, मन स्थिर न रहा होता तो वे दुबारा यात्रा पर जाने से मना करने को स्वतंत्र थे, किन्तु उन पर तो श्री गुरु नानक साहिब की भक्ति और प्रेम का पक्का रंग चढ़ चुका था। वे श्री गुरु नानक साहिब की संगत से पल भर भी अलग नहीं होना चाहते थे। उन्हें ज्ञान हो गया था कि परमात्मा और धर्म के मार्ग पर चलने में कितनी कठिनाइयां हैं, किन्तु उनका निश्चय अविचल रहा। ऐसी अवस्था ही जीवन-मुक्त होने की राह बनती है :

जिसु अंतरि प्रीति लगै सो मुकता॥

इंद्री वसि सच संजमि जुगता ॥
गुर कै सबदि सदा हरि धिआए एहा भगति हरि भावणिआ ॥ *(पन्ना १२२)*

भाई मरदाना जी पहले सिक्ख थे जिन्हें लंबे समय तक श्री गुरु नानक साहिब की संगति का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे पहले सिक्ख थे जिनके मन में गुरु साहिब के लिये प्रेम और समर्पण का भाव पैदा हुआ, जिससे वे समस्त सांसारिक चिंताओं से मुक्त हो गये। जीवन भर वे गुरु-शबद से जुड़े रहे और उनकी रबाब इलाही बाणी को सुर देती रही। गुरु का हुक्म मानने वाले वे पहले सिक्ख तो थे ही और वे ही ऐसे पहले सिक्ख थे जिन्हें गुरु साहिब के सर्वाधिक हुक्म-पालन के अवसर मिले, जिससे उनका जीवन धन्य हो गया। जब श्री गुरु नानक साहिब ने कहा, वे उठे, जब कहा, साथ चल दिये, जहां कहा, रुक गये, जहां भेजा, चले गये। भाई मरदाना जी ने इस तरह ५४ वर्ष का समय श्री गुरु नानक साहिब का हुक्म मानते हुए व्यतीत किया। यह कोई कम समय नहीं होता। फिर वे दिन-रात गुरु साहिब की सेवा में रहे। वे अपने माता-पिता की सातवीं सन्तान थे। कहते हैं कि इसके पूर्व की सभी छः संतानें जिन्दा न रही थीं। इसी कारण भाई मरदाना जी के प्रति सभी विशेष चिंतित रहते थे। उनका नाम 'दाना' या 'मरदा ना' रखा गया था। 'मरदाना' नाम उन्हें श्री गुरु नानक साहिब ने दिया था। भाई मरदाना जी को श्री गुरु नानक साहिब की बहुत बाणी कंठस्थ थी और वे रबाब बजाते हुए उसे संगत को सुनाया भी करते थे। इस तरह वे सिक्ख धर्म के पहले कीर्तनिये भी बने। इसी से कीर्तन परंपरा का जन्म हुआ था।

भाई मरदाना जी के परलोक गमन के बारे में भिन्न-भिन्न विचार हैं। कुछ इतिहासकार मानते हैं कि उन्होंने अफगानिस्तान में जीवन की अंतिम साँस ली और उस समय श्री गुरु नानक साहिब वहां उपस्थित थे। श्री गुरु नानक साहिब ने भाई मरदाना जी से पूछा था कि क्या उनकी समाधि बनाई जाये। भाई मरदाना जी ने मना करते हुए कहा था कि जब उनकी आत्मा ही शरीर को छोड़ कर जा रही है तब पत्थर की समाधि का क्या प्रयोजन है!

भाई मरदाना जी श्री गुरु नानक साहिब के होकर जिये और उन्हीं के होकर इस संसार से विदा हुए। उनके बारे में कुछ साखिओं में जैसा चरित्र उभारने का प्रयास किया गया उन्हें अलग कर जब भाई मरदाना जी के प्रेम और समर्पण को देखने का प्रयास करें तो एक पूर्ण गुरसिक्ख का स्वरूप प्रकट होता है, जिसे गुरबाणी में स्थापित किया गया।

महान शहीद पिता-पुत्र : भाई सुबेग सिंघ-भाई शाहबाज़ सिंघ

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

सिक्ख कौम को एक अलग, विशेष, उल्लेखनीय, सम्मानजनक, बहादुर व स्वाभिमानी कौम का रुतबा प्राप्त है। धर्म, सच, न्याय, समानता, समाजवाद और मानव की स्वतंत्रता व आत्मगौरव की रक्षा हेतु सिक्खों ने जितनी कुर्बानियां दी हैं, उतनी कुर्बानियां विश्व के अन्य किसी भी समुदाय के लोगों ने नहीं दी हैं। सिक्खी का जो आज तक का इतिहास रहा है, वह गौरवशाली व प्रेरणामयी है। सिक्खी के इतिहास के प्रत्येक पृष्ठ पर जांबाज़ सिक्खों की शहादत का वर्णन पढ़ने व सुनने को मिलता है। ऐसे ही एक पृष्ठ पर महान शहीद पिता-पुत्र— भाई सुबेग सिंघ-भाई शाहबाज़ सिंघ के नाम भी दर्ज हैं।

दिवंगत प्रसिद्ध सिक्ख विद्वान, लेखक तथा चिंतक ज्ञानी भजन सिंघ के कथनानुसार सन् १७४८ ई. सिक्ख इतिहास में विशेष व महानता वाला साल है। सिंघों के बारह जत्थे बनाकर उन्हें 'बारह मिसलों' का नाम दिया गया। एक ओर सिंघ संगठित हो रहे थे, तो दूसरी ओर जुल्म भी अपनी चरम सीमा पर पहुंच रहा था। लाहौर के ज़ालिम व क्रूर शासकों ने इसी वर्ष दो महान् शख्सियतों, पिता-पुत्र— भाई सुबेग सिंघ-भाई शाहबाज़ सिंघ को चरखड़ी पर चढ़ाकर शहीद किया था। इन दोनों महान् गुरसिक्खों को सिक्ख शहीदों में अमर स्थान प्राप्त हो गया। अरदास में इनकी महान् शहादत का विशेष वर्णन है और इस शहादत को भी अन्य सिक्ख शहीदों की शहादत के साथ स्मरण किया जाता है।

भाई सुबेग सिंघ लाहौर (पाकिस्तान) से कुछ मील दूर स्थित गांव झम्बर के निवासी थे। वे बहुत समझदार, चिंतनशील, नीतिज्ञ, व्यापारी, ठेकेदार और स्वभाव के मिलनसार थे। अपने इन्हीं गुणों के कारण वे अपने क्षेत्र में अति लोकप्रिय व सम्मानित व्यक्ति थे। लाहौर का ज़ालिम व कट्टर गवर्नर ज़करिया खान उन्हें सिक्ख होने के बावजूद महत्व देता था। उसने कुछ अरसे के लिए उन्हें लाहौर का कोतवाल भी नियुक्त किया था। किसी सिक्ख द्वारा उस समय किसी सरकारी पद पर नियुक्ति पाना अपने आप में अचंभित करने वाला कारनामा था। इसी कारण भाई सुबेग सिंघ का नाम प्रसिद्ध हो गया।

सरकारी ठेकेदार होने के बावजूद भाई सुबेग सिंघ बहुत ईमानदार थे। लाहौर के शासक उनका बहुत सम्मान करते थे। जब ज़करिया खान लाहौर का गवर्नर बना, तब उसने भाई सुबेग सिंघ के साथ मुलाकात के दौरान महसूस किया

*बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; फोन : ९८७२२-५४९९०

कि वे उसके बहुत काम आने वाले हैं।

जो व्यक्ति कठोर हृदय और निर्दयी स्वभाव वाला होता है, वो जुल्म करने से बाज नहीं आता। वाँ गांव के निवासी भाई तारा सिंघ को ज़करिया खान ने शहीद करवा दिया। इससे पूरी सिक्ख कौम में आक्रोश फैल गया। दीवान दरबारा सिंघ तथा सरदार कपूर सिंघ फैजलपुरिया के नेतृत्व में निर्णय लिया गया कि लाहौर सरकार से भाई तारा सिंघ की शहादत का बदला लेने हेतु आर्थिक नाकाबंदी कर दी जाए। फिर घटनाओं की लड़ी बनती चली गई।

सात वर्ष तक सिंघों ने लाहौर की ऐसी आर्थिक नाकाबंदी की कि ज़करिया खान की नाक में दम कर दिया। वह बहुत घबरा गया। सरकारी खज़ाना खाली हो गया। बाहर से आने वाली वसूली की राशि सिंघ रास्ते में ही हथिया लेते। सिक्खों पर सैन्य कठोरता भी सफल न हुई। अंत में हार स्वीकार करते हुए ज़करिया खान ने सिक्खों के साथ समझौता करने का मन बनाया। उसने सोचा कि इस काम में भाई सुबेग सिंघ उसकी मदद कर सकते हैं। उसने संदेश भेज कार भाई सुबेग सिंघ को बुलवा लिया और कहा, ''आपने कई बार कहा है कि सरकार को सिक्खों के साथ अपने संबंध सुधार लेने चाहिए। अब आप मध्यस्थ बनकर मेरा सिक्खों के साथ समझौता करवा दें!''

भाई सुबेग ने पूछा, ''समझौते की शर्तें क्या होंगी?''

''हमारे राज्य में सिक्ख गड़बड़ करना छोड़ दें।'' उसने कहा।

''आप बदले में क्या देंगे?'' भाई सुबेग सिंघ ने सीधे-सीधे पूछा।

''उनके एक प्रमुख को नवाब का पद दे दिया जाएगा।'' ज़करिया खान का उत्तर था।

''बस!'' भाई सुबेग सिंघ मुस्कराए।

''उन्हें और क्या चाहिए?'' ज़करिया खान ने कहा।

''वे नहीं मानेंगे।'' भाई सुबेग का जवाब था।

''आखिर सिक्ख चाहते क्या हैं?'' ज़करिया खान झुंझलाया।

''पहले उन्हें गुरुधामों की खुली यात्रा तथा सेवा-संभाल करने की अनुमति दी जाए।'' भाई सुबेग सिंघ उसे समझाना चाहते थे कि सिक्खों को गुरुद्वारा साहिबान अपनी जान से अधिक प्रिय हैं।

''यह छूट दे दी जाएगी।'' उसने यह सुझाव मान लिया।

''उन्हें जागीर भी दी जाए, ताकि गुरुद्वारा साहिबान की संभाल के लिए खर्च की व्यवस्था हो सके।'' भाई सुबेग सिंघ ने कहा।

इस प्रकार भाई सुबेग सिंघ ने अनेक शर्तें लिखित रूप में मनवा लीं और श्री अमृतसर लौट आए। यहां पर सिंघ पहले से मौजूद थे। भाई सुबेग सिंघ ने दीवान दरबारा सिंघ को संदेश भिजवाया और मिलकर सारी स्थिति स्पष्ट कर दी। दीवान जी ने कहा कि ''वे इस बारे में अकेले कुछ नहीं कह सकते। सरबत्त खालसा का काम है कि वह ऐसा निर्णय ले।''

''तो ठीक है। मुझे सरबत्त खालसा की सभा में बुलवा लिया जाए। मैं वहां पर सारी बात कह दूंगा।'' भाई सुबेग सिंघ ने विनम्रतापूर्वक कहा।

सरबत्त खालसा की सभा में दीवान दरबारा सिंघ ने वह संपूर्ण पेशकश बयान की, जो सरकार की ओर से पेश की गई थी। उस पर विचार-विमर्श किया गया। अनेक सिंघों की राय थी कि सरकार की इस पेशकश को ठुकरा दिया जाए। दीवान दरबारा सिंघ ने बताया कि भाई सुबेग सिंघ इस सभा में उपस्थित होकर सारी स्थिति स्पष्ट करना चाहते हैं। सरबत्त खालसा ने तुरंत फैसला सुनाया कि भाई सुबेग सिंघ उस सरकार के साथ हैं, जो सिक्खों के विरुद्ध है, अत: वे 'तनखाहिया' (दोषी) हैं। पहले वे 'तनखाह' (धार्मिक सजा) पूरी करें फिर सभा में आ सकते हैं।

सरबत्त खालसा की ओर से उन्हें जो 'तनखाह' लगाई गई, उसे भाई सुबेग सिंघ ने अति विनम्रतापूर्वक संगत के जूतों के पास खड़े होकर, गले में पल्ला डाल कर स्वीकार किया और फिर सभा में आकर अपनी विद्वता द्वारा सभी सिंघों को मना लिया कि सरकार के प्रस्ताव को मान लिया जाए। जब तक निभेगी, तब तक सही। कम से कम गुरुद्वारा साहिबान की मरम्मत व देखभाल का अवसर तो मिलेगा।

इस तरह भाई सुबेग सिंघ की बदौलत फैसला हो गया कि सरदार कपूर सिंघ को नवाब का पद सरकार देगी। इस फैसले पर ज़करिया खान बहुत खुश हुआ। उसने भाई सुबेग सिंघ को लाहौर का कोतवाल नियुक्त कर दिया। इस पद पर पहुंच कर भाई सुबेग सिंघ को लोगों का और अधिक प्यार व आदर मिलने लगा तथा मित्र व शत्रु सभी उनकी योग्यता के प्रशंसक बन गए।

कट्टर स्वभाव के कारण ज़करिया खान की सोच सिंघों के विरुद्ध पुन: अपना असर दिखाने लगी और सिंघों ने भी पुन: सरकार का घेरा तंग करना शुरू कर दिया। उसने भाई सुबेग सिंघ पर यह आरोप लगाकर उन्हें कोतवाल के पद से हटा दिया कि वे सरकारी भेद सिंघों तक पहुंचाते हैं। भाई सुबेग सिंघ अपने पहले वाले कारोबार में लग गए।

भाई सुबेग सिंघ का सुपुत्र भाई शाहबाज सिंघ अति सुंदर स्वरूप तथा तीखे नयन-नक्श वाला चुस्त, होनहार, प्रभावशाली युवक था। अठारह वर्ष की आयु वाला वह बांका शेर जवान हर देखने वाले का मन मोह लेता था। जिस मौलवी के पास वह विद्या प्राप्त कर रहा था, उसने मन में सोचा कि इसे मुसलमान बनाया जाए और फिर अपनी युवा बेटी की शादी इसके साथ कर दी जाए। मौलवी ने काफी कोशिश की, परंतु भाई शाहबाज सिंघ उसके जाल में न फंसा। उसने उसकी प्रत्येक कोशिश को नाकाम कर दिया। अंत में मौलवी हताश होकर उसे डराने-धमकाने लगा। भाई शाहबाज़ सिंघ को धर्म के विषय में काफी ज्ञान प्राप्त था। वह उसकी हर बात को अपने सटीक तर्क द्वारा काट देता और मौलवी को निरुत्तर कर देता। अंत में मौलवी ने क्षेत्र के शासक के पास झूठी शिकायत कर दी कि भाई

शाहबाज़ सिंघ ने इसलाम धर्म का निरादर किया है। वह हमारे धर्म के विरुद्ध बोलता है और लोगों को भड़काता है। इसी प्रकार के और भी दोष लगाकर मनघढ़त कहानी बनाई गई, जैसी हकीकत राय के विरुद्ध बनाई गई थी।

भाई शाहबाज़ सिंघ को गिरफ्तार कर ज़करिया खान के पास लाहौर भेजा ही जा रहा था कि ज़करिया खान की मृत्यु हो गई। उसकी जगह यहिया खान पंजाब का गवर्नर बन गया। उसने भाई शाहबाज सिंघ का वाद (मुकद्दमा) सुनना शुरू किया। उसने मौलवी के बयानात तथा क्षेत्र के चौधरी की रिपोर्ट को सही मानकर भाई शाहबाज़ सिंघ को दोषी घोषित कर दिया। साथ ही भाई सुबेग सिंघ की गिरफ्तारी का आदेश भी दे दिया। बड़े दुख की बात थी कि दोनों निर्दोष पिता-पुत्र को लाहौर के बड़े काजी के सुपुर्द कर दिया गया कि मृत्यु या इसलाम धर्म में से जो पसंद हो, उसे चुन लो। जांबाज, निर्भीक गुरु के सिंघों ने जयकारा गुंजाकर मृत्यु को चुना। मानो ज़ालिम सरकार के मुंह पर ज़ोर से तमाचा जड़ा हो।

पहले भाई शाहबाज़ सिंघ को चरखड़ी पर चढ़ाया गया। बड़े व नुकीले कीलों वाले एक बड़े लोहे वाले चक्कर पर लेटाकर उन्हें बांध दिया गया। यातनाएं देने का यह ज़ालिमाना ढंग था। भाई सुबेग सिंघ ने अपने युवा पुत्र से कहा, ''ऐ पुत्र! अकाल-अकाल गुंजाते हुए शहादत प्राप्त करना!''

पिता की आशीष पर पुत्र अकाल-अकाल गुंजाते हुए सिक्खी केशों व श्वासों संग निभा गया। इसी ज़ालिमाना ढंग द्वारा भाई सुबेग सिंघ को भी शहीद कर दिया गया।

१७४५ ई. में हुई पिता-पुत्र की महान् शहादत पर देश भर में कोहराम मच गया। सबको पता था कि पिता-पुत्र दोनों बहुत अच्छे, नेक व निर्दोष इन्सान थे। सिक्ख कौम का क्रोध के कारण खून खौलने लगा। सिंघों ने उनकी शहादत का बदला लेने के लिए १२ जत्थे बना लिए। फिर वे पूरे पंजाब में छा गए। उन्होंने मुगलों, दुर्रानियों तथा अन्य विदेशी आक्रमणकारियों के छक्के छुड़ा दिए और पंजाब में पुनः उनके पैर नहीं जमने दिए।

अरदास करते समय प्रत्येक सिक्ख श्रद्धापूर्वक शहीद भाई सुबेग सिंघ-भाई शाहबाज सिंघ की महान् शहादत को याद करता है। उन्हें कोटि-कोटि प्रणाम करता है। हमें अपने बच्चों को उनकी शहादत के बारे में विस्तारपूर्वक बताना चाहिए, ताकि वे भी सिक्खी के सिद्धांतों में दृढ़निश्चयी बन सकें। महान् एवं अमर पिता-पुत्र के आदर्श जीवन-वृत्तांत को स्कूलों के पाठ्यक्रम में भी शामिल किया जाना चाहिए, जैसे वीर हकीकत राय की कुर्बानी-भरी जीवन-गाथा को शामिल किया गया है।

गुरुद्वारों के कार सेवक एवं सिक्ख जरनैल : सरदार बघेल सिंघ

– डॉ. (कर्नल) दलविंदर सिंघ*

सरदार बघेल सिंघ सिक्ख इतिहास का वो पृष्ठ हैं जिन्होंने बाबा बंदा सिंघ बहादुर के बाद मिसल काल के संघर्ष में भरपूर योगदान दिया। उन्होंने सिक्खों का प्रभाव अवध, उत्तरांचल और दिल्ली तक फैलाया। यदि दोआबा व माझा क्षेत्र महाराजा रणजीत सिंघ के साम्राज्य-विस्तार की पृष्ठभूमि बने, मालवा फूलकिया रियासतों के बढ़ने-फूलने का मैदान बना, तो हरियाणा सरदार बघेल सिंघ के प्रभाव को बढ़ाने का केंद्र रहा। सरदार बघेल सिंघ के कारण सिक्खों ने १७ मार्च, १७८३ ई. को लाल किले पर खालसाई निशान साहिब फहराया। सरदार बघेल सिंघ ही थे जिन्होंने सिक्खों का प्रभाव दिल्ली पर जमाए रखा। दिल्ली की चुंगी वसूलने का हक उन्हें आजीवन मिला रहा। अवध और उत्तरांचल के क्षेत्र पर हमला कर रक्षा प्रबंध स्थापित करने में वे अग्रणी थे। मराठों के साथ दिल्ली के शासन-प्रबंध के बारे में सिक्खों के साथ समझौता हुआ तो ये सरदार बघेल सिंघ ही थे जिन्होंने सिक्खों की तरफ से राज दरबार पर मराठों के साथ त्रिपक्षीय समझौता किया। उपरांत दिल्ली की उत्तरी दिशा वाला इलाका सिक्खों के अधीन आ गया, जिसमें पूरा हरियाणा शामिल था। इस इलाके का प्रबंध तब से लेकर अंग्रेज़ शासन होने तक सरदार बघेल सिंघ व उनके परिवार के अधीन रहा। दिल्ली शासन में उनका सदैव प्रभाव रहा। दिल्ली शासन के प्रभाव के समय उन्होंने गुरुद्वारा सीसगंज साहिब तथा अन्य गुरुद्वारों की निशानदेही की और ये स्थान बनवाए। सिक्खी की ख़ातिर सरदार बघेल सिंघ का यह सदा याद रहने वाला योगदान है।

सरदार बघेल सिंघ का जन्म ज़िला तरनतारन के गाँव झबाल में हुआ। होश संभाली, युवावस्था में प्रवेश करते ही अमृत छका और दल खालसा का सदस्य बन गये, जो उस समय सिक्ख योद्धाओं की नुमायंदा जमात थी। जब मिसलें बनी तो ये करोड़सिंघिया मिसल में शामिल हो गये जिसका प्रमुख मशहूर जत्थेदार करोड़ा सिंघ था। ऊँचा-लम्बा, सुढौल व सुंदर कद-काठ, पक्का रंग और भूरी आँखों वाला बहादुर, हौसले वाला, खुले दिल वाला यह योद्धा सारी मिसल के आकर्षण का केंद्र होता था। घुड़सवारी करते, निशाना लगाते, तेग़ चलाते, सबको पराजित कर देते और जत्थेदार की वाह-वाह बटोरते। बाहर से सख़्त, अंदर से नरम, तेज-तरार दूरंदेशी समझ वाला दिमाग़, हर जरूरतमंद की मदद करने के

*१९२५, बसंत एवेन्यू, लुधियाना— १४१०१०, फोन : ९८१५३-६६७२६

लिए तत्पर, मिष्टभाषी और आदर देने वाले ये योद्धा सबसे इज्जत कमाते। ये ऐसे सिक्ख थे जो सिक्खी जीवन-मूल्यों के पक्के धारक थे। इन पर हर कोई भरोसा करता, क्योंकि दूसरे के भरोसे को कायम रखने के लिए ये अपनी जान तक लगाने के लिए तैयार रहते। सभी धर्मों के लोग इनके पास मदद के लिए पहुँचते। जब बेगम समरू पर अवध के नवाब ने हमला किया तो उसे सरदार बघेल सिंघ ने ही बचाया। इनका सिक्का मान कर बेगम समरू ने इन्हें धर्म-भाई बना लिया और अवध के नवाब ने सिक्खी धारण कर ली। जब अंग्रेज़ थामस ने ज़ींद पर हमला कर अपने आपको मुसीबत में घिरा समझा तो उसने भी जरनैल सरदार बघेल सिंघ से मदद हेतु मिन्नत की और सरदार बघेल सिंघ ने उसकी मदद कर उसे विजय दिलाई।

जब भरतपुर के राजा ने सरदार करोड़ सिंघ के सामने गुजारिश की कि उसकी मदद की जाये तो वे पाँच सौ सवार लेकर पहुँचे। रास्ते में एक छोटे युद्ध में जत्थेदार करोड़ा सिंघ के गोली लगने से वे शहीद हो गये। उनके शहीद होने के बाद सरदार बघेल सिंघ ने जत्थे की कमान संभाल ली। सरदार बघेल सिंघ का सुडौल शरीर, ऊँचा कद, डील-डौल देख कर घुमेर का राजा घबरा गया और सरदार बघेल सिंघ को सेना वापिस ले जाने के लिए विनती करने लगा। सरदार बघेल सिंघ ने मुआवज़ा माँगा तो वह मिन्नतें करने लगा। सरदार बघेल सिंघ का मन पसीज गया और ये मुआवज़े का कुछ हिस्सा वसूल कर व उसकी खातिरदारी से खुश होकर वापिस लौट आये।

लौटते समय इन्होंने जलंधर के इलाके से लगान वसूल करना शुरू किया तो तलवान के सरदार मियां महमूद ख़ान राजपुर ने इन्हें बढ़िया घोड़ा पेश किया, जिसकी सवारी सरदार बघेल सिंघ के लिए मनभावन हो गई। दूसरी ओर सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया की तरफ से जब मियां महमूद ख़ान को धमकी मिली तो सरदार बघेल सिंघ की सलाह पर यहाँ सिक्खों का एक मज़बूत किला और चौकी स्थापित कर दी गई, जिससे इस इलाके पर सरदार बघेल सिंघ का पक्का प्रभाव कायम हो गया। सरदार बघेल सिंघ को इस इलाके से लगान भी मिलने लगा। जलंधर दुआब पहले ही करोड़सिंघिया मिसल के अधीन ही था, जहाँ से एक लाख सालाना लगान मिलता था। सरदार बघेल सिंघ ने हुशियारपुर के नज़दीक हरियाणा को अपना मुख्य ठिकाना बना कर अपनी पत्नी माता रूप कौर को मुख्य प्रबंधक नियुक्त कर दिया।

सन् १७६१ में ये करनाल की तरफ लौटे और खुरदीन, खनौरी, छलौदी, जमैतगढ़ आदि इलाके, जिनकी सालाना आमदन तीन लाख थी, जीत कर अपने कब्ज़े में कर लिए और छलौदी में अपना निवास बनाया। इस समय तक इनके पास १२ हज़ार घुड़सवारों के अलावा बहुत बड़ी पैदल फ़ौज थी। यह सारा इलाका इन्होंने अपनी दूसरी पत्नी माता राम कौर की ज़िम्मेदारी में कर दिया। तीसरी पत्नी माता रतन कौर को कलानौर

का इलाका दे दिया और अपने आपको सभी इलाकों को बाहरी हमले से रोकने के लिए तथा इलाके के और विस्तार के लिए मुक्त रखा।

महाराजा अमर सिंघ पटियाला ने जब इनके इलाके को हथियाना चाहा तो सरदार बघेल सिंघ भारी फ़ौज लेकर उस पर चढ़ दिये। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया और सरदार चैन सिंघ वकील की मध्यस्थता से महाराजा अमर सिंघ ने इलाके भी लौटा दिए और अपने वकील को भेजा, जिसने कहा, ''सिंघ जी! रुकिए! सामने भी पंथ के सेवक हैं। जो आज्ञा हो।'' इसके बाद महाराजा अमर सिंघ ने अपने सुपुत्र साहिब सिंघ को सरदार बघेल सिंघ के जत्थे से अमृत छका कर अमृतधारी बनवा दिया। दोनों में सदा के लिए संधि हो गई।

सरहिंद पर हमला कर सरहिंद का सारा हिस्सा सिक्ख मिसलों ने बाँट लिया और सारा पंजाब मिसलों के अधीन हो गया। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के साथ मिलकर ४० हज़ार की फ़ौज लेकर सहारनपुर, मुजफ्फरपुर तथा मेरठ के इलाके में २० फरवरी, १७६४ ई. से हमला शुरू कर दिया। फिर गंगा पार कर नज़ीबाबाद, मुरादाबाद और अनूप शहर के इलाकों पर अपना रक्षा-प्रबंध जमा कर दो महीने के बाद लौटे। सन् १७७५ में ब्यास के आस-पास का इलाका तथा सन् १७९२ में इन्होंने तरनतारन, सभराउं एवं सरहाली अपने कब्ज़े में किये।

सन् १७६१ से १७७० ई. तक अवध का नवाब नजीब-उद-दौला, दिल्ली का प्रबंध संभाले हुए था। जब सिक्खों ने उसके इलाके को कब्ज़े में लिया तो उसने डर के मारे ग्यारह लाख सालाना लगान देना मान कर सिक्खों से अपनी जान छुड़ाई। सन् १७७३ में जाबिता ख़ान रोहिला से ननौता और जलालाबाद जीते।

एक ब्राह्मण सन् १७६६ में श्री अमृतसर श्री अकाल तख़्त साहिब पर फ़रियाद लेकर आया कि सैयद मुहम्मद हसन ख़ान उसकी लड़की को डोली में डाल कर ले गया है और मुसलमान बनने के लिए परेशान कर रहा है। सरदार बघेल सिंघ दल खालसा के अन्य जत्थेदारों सहित हसन ख़ान पर हमला कर लड़की को छुड़ाया। इसके बाद जब भी कोई किसी की बहन-बेटी की इज्जत के साथ खेलने की कोशिश करता, वह फरियाद लेकर सरदार बघेल सिंघ के पास पहुँच जाता। सरदार बघेल सिंघ बहन-बेटियों की आबरू के रक्षक बन गये। सतलुज और गंगा दुआब के इलाके का समूचा प्रबंध सरदार बघेल सिंघ के हाथ सौंप दिया गया। 'पंथ प्रकाश' के अनुसार हसन ख़ान भाग कर छिप गया। जहां वो छिपा था वहां आग लगा दी गई। वह उसी आग में जल गया। इस इलाके के प्रभावी व्यक्ति का समूचा प्रभाव तब से सिक्खों के हाथ में आ गया।

सिक्खों का दिल्ली पर हमला १८ जनवरी, १७७४ ई. को हुआ था, जो सरदार बघेल सिंघ के नेतृत्व में किया गया। बादशाह ने सरदार बघेल सिंघ को सम्मान सहित बुलाया और दस हज़ार घुड़सवारों सहित उनकी रक्षा करने के

लिए कहा, जिसके लिए शाहबाज़पुर का इलाका सरदार बघेल सिंघ को सौंपा जाना था। सरदार बघेल सिंघ ने यह नामंज़ूर कर दिया और खिलअत एवं अन्य तोहफ़े लेकर वापिस आ गये। बादशाह ने बेगम समरू (सरधाना की बेगम), जो सरदार बघेल सिंघ की धर्म की बहन बनी हुई थी, से फरिआद की कि वह सरदार बघेल सिंघ के साथ समझौता करवाए। दिल्ली से लौटते समय सरदार बघेल सिंघ ने देवबन्द और सहारनपुर को जीत कर गौंसगढ़ के नवाब से ५० हज़ार उगाहे।

सन् १७७५ में यमुना पार की तरफ सिक्ख बढ़े। २२ अप्रैल, १७७५ ई. को कुंजपुरा से यमुना पार कर लखनौती, गौंसगढ़ देवबन्द तथा अन्य इलाके कब्ज़े में किये। जाबिता ख़ान रोहिला ने गोरगढ़ बचाने के लिए ५० हज़ार रुपए सिक्खों को सालाना लगान देना माना। फिर शामली, कांधला तथा मेरठ होते हुए अलीगढ़ के निकट खुर्जा तक अपना प्रभाव जमाया और लौटते समय दिल्ली के पहाड़गंज एवं जयसिंह पुर को जीता। २४ जुलाई, १७७५ ई. को यमुना पार से वापिस लौटे।

अब्दुल कासिम ने जब जाबिता ख़ान पर हमला कर उससे मेरठ छीन लिया तो उसने सरदार बघेल सिंघ के पास मदद के लिए फरियाद की। अब्दुल कासिम पर हमला ११ मार्च, १७७६ ई. को किया। मेरठ छुड़वाया और अब्दुल कासिम मौत के घाट उतार दिया गया। जाबिता ख़ान के साथ दोस्ती करने पर सिक्खों का प्रभाव अवध तक बढ़ गया। मराठों को यह रास नहीं आया।

सिक्ख वश में न आते देख शाह आलम ने अपने साहिबज़ादे शाह बख़्त को सिक्खों पर हमला करने के लिए पटियाला की तरफ भेजा। बड़ी फ़ौज आगे बढ़ती हुई देख कर सरदार बघेल सिंघ ने अक्लमंदी से काम लिया। उन्होंने आगे बैठ कर शाह बख़्त को नजराना भेंट किया और शाह को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। जब शाह पटियाला की तरफ बढ़ा तो सभी सिक्खों ने एक साथ कर शाह बख़्त पर हमला बोल दिया। बाद में सरदार बघेल सिंघ ने शाही फौज का रास्ता रोक लिया। शाही सेना का बुरा हाल हुआ तो अब्दुल अहद, नज़फ ख़ान आदि को दिल्ली बुला लिया गया।

नवंबर, १७७९ ई. में नज़फ ख़ान ने अपने पोते मिर्ज़ा शफी को दस हज़ार सेना और सैकड़ों तोपों सहित सिक्खों को कुचलने के लिए भेजा। मिर्ज़ा शफी ने चालाकी के साथ कई सिक्ख सरदार भी साथ मिला लिए। इस हालत में सरदार बघेल सिंघ ने शाही सेना पर सीधे हमला करने की बजाय गुरिल्ला हमले करने शुरू कर दिए।

दिल्ली के जरनैल के पोते मिर्ज़ा शफी ने सिक्खों के विरुद्ध सिक्खों वाला गुरिल्ला युद्ध ही अपनाना उचित समझा। महाराजा पटियाला और महाराजा जींद की सिक्खों के साथ अनबन का भी उसने फ़ायदा उठाया। जाबिता ख़ान ने दीवान सिंघ के साथ मिल कर सरदार बघेल सिंघ के

विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। सरदार बघेल सिंघ के साथ उस समय सरदार सदा सिंघ, सरदार दूला सिंघ, सरदार करम सिंघ शहीद, सरदार गुरबखश सिंघ, सरदार लाल सिंघ और सरदार करन सिंघ आ जुड़े। ६८०० घुड़सवारों के साथ इन्होंने यमुना पार हमला करने की ठानी, ताकि मिर्ज़ा शफी को पीछे से घेरा जा सके। २५ फरवरी, १७८१ ई. को रडौर के कैंप और फिर २८ फरवरी को सिकन्दरा के कैंप पर हमला किया, जिससे मिर्ज़ा शफी हिल गया। सिक्खों ने ११ मार्च को किए हमले में तीन हज़ार घोड़े हथिया लिए। मिर्ज़ा शफी के मददगारों— महाराजा पटियाला अमर सिंघ, सुपुत्र साहिब सिंघ, भाग सिंघ, भंगा सिंघ को अलग करने के लिए सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने उन पर हमला कर दिया तो वे पीछे हट गए। मुग़ल जरनैल मिर्ज़ा शफी गुरिल्ला युद्ध में सिक्खों को मात न दे सका और १२ जून, १७८१ ई. को सरदार बघेल सिंघ तथा सरदार गुरदित्त सिंघ को दोस्ती का हाथ बढ़ाने के लिए ख़त लिखा। बदले में रडौर, बबीन और शामगढ़ देना माने, परन्तु सरदार बघेल सिंघ ने अपनी शर्तें रखी।

१० जून, १७८१ ई. के ख़त के अनुसार नज़फ ख़ान ने अंबर शाह को दिल्ली से मिर्ज़ा शफी के पास ४० हज़ार सिपाही और तोपें देकर भेजा। सिक्खों के साथ घमासान युद्ध हुआ, जिसमें १० से १५ हज़ार शाही फ़ौज मारी गई और तोपें भी हाथ से गईं। सिक्खों से बुरी तरह से हारने के बाद मुग़ल फौज पानीपत लौट आई। ६ अप्रैल, १७८२ ई. को नज़फ ख़ान की मृत्यु हो गई। फरवरी, १७८३ में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, सरदार बघेल सिंघ और अन्य जरनैल ७० हज़ार सिपाही लेकर गाजियाबाद, बुलंद शहर और खुर्जा पर जा चढ़े। सबने जो जीता उसका दसवंध श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर भेजा, जो एक लाख था। फिर इन्होंने अलीगढ़, टुंडला, शिकोहाबाद और फरुखाबाद पर विजय पाई। सरदार बघेल सिंघ के हाथ हीरों जड़ी एक छड़ी लगी, जो उस समय ३३ हज़ार रुपए की थी। उन्होंने वापिस लौटते समय आगरा पर विजय हासिल की। सिक्ख अब दिल्ली पर प्रभावशाली हो गए थे।

८ मार्च, १७८३ ई. को सरदार बघेल सिंघ ने ४० हज़ार फ़ौज के साथ यमुना किनारे बरगाड़ी घाट पर कब्ज़ा कर लिया। फिर मलक गंज और सब्ज़ी मंडी पर विजय प्राप्त की और मुगलपुरा एवं महताबपुरा को जा घेरा। सिक्ख अजमेरी गेट के रास्ते दिल्ली में जा दाख़िल हुए और हौज़ काज़ी को जीता। बादशाह ने समरू बेगम को बुलावा भेजा। इतने में सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया और सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया हिसार की तरफ से १० हज़ार फ़ौज लेकर पहुँच गए। सरदार बघेल सिंघ ने जिस जगह अपने ३० हज़ार सिपाही सुरक्षित रखे थे, वह जगह अब तीस हज़ारी नाम से प्रसिद्ध है।

१७ मार्च, १७८३ ई. का वह ऐतिहासिक दिन है जब सिक्खों ने लाल किले पर खालसाई निशान साहिब फहराया। शाह आलम छिप गया।

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को तख़्त पर बिठाया गया और मोर पंख झुलाए गए। सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया ने इसे नापसन्द किया तो सरदार आहलूवालिया ने तख़्त छोड़ दिया।

दीवान-ए-ख़ास और दीवान-ए-आम पर कब्ज़ा किया ही था कि समरू बेगम दिल्ली आ गई। उसने शाह आलम (दूसरे) को सिक्खों के बारे में बताया और सरदार बघेल सिंघ के साथ बात करने के लिए कहा। सरदार बघेल सिंघ से मिल कर बेगम समरो ने बादशाह से ये शर्तें मनवाईं :—

१. ख़ालसे को तीन लाख इवज़ाना दिया जायेगा।

२. सरदार बघेल सिंघ दिल्ली में चार हज़ार सिपाही रख सकते हैं। इनका कार्यालय सब्ज़ी मंडी होगा।

३. सरदार बघेल सिंघ को सात सिक्ख ऐतिहासिक गुरुद्वारे बनाने की छूट होगी, जो जल्दी ही पूर्ण करने पर ये वापिस जायेंगे।

४. सरदार बघेल सिंघ पूरी दिल्ली की चुंगी वसूलेंगे और छ्यानी (रुपए में से छः आने की) अपने ख़र्च के लिए लेंगे, जिसमें से गुरुद्वारे बनाए जाएंगे।

५. दिल्ली में रहते हुए सिक्ख कोई हमला नहीं करेंगे।

समझौते के बाद ४ हज़ार सिपाहियों के साथ सरदार बघेल सिंघ ने सात गुरुद्वारे— गुरुद्वारा माता सुंदरी जी, गुरुद्वारा मजनूं टिल्ला साहिब, गुरुद्वारा मोती बाग़, गुरुद्वारा बंगला साहिब, गुरुद्वारा सीसगंज साहिब, गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब, गुरुद्वारा बाला साहिब प्राथमिकता के आधार पर बनाए। सरदार बघेल सिंघ की सिक्ख कौम के लिए यह बहुत बड़ी देन है। बादशाह शाह आलम (दूसरा) सरदार बघेल सिंघ से मिलने का इछुक्क था, परन्तु इसके लिए सरदार बघेल सिंघ ने शर्तें रखी कि वह सिर नहीं झुकाएगा, अकेला नहीं आयेगा . . . आदि। बादशाह के मानने पर सब कसाइयों की दुकानें बंद की गईं। हाथी की सवारी पर सरदार बघेल सिंघ शाही दरबार शस्त्रधारी सिक्खों सहित पहुँचे। बादशाह मिल कर खुश हुआ और तोहफ़े दिए। सन् १७८४ और फिर सन् १७८९ में यमुना पार से उगाही चलती रही।

सरदार बघेल सिंघ का अकाल प्रस्थान १८०० ई. में हुआ बताया जाता है। इस तरह सिक्ख राज का एक उज्जवल सितारा सिक्खों को चढ़दी कला में ले जाकर ईश्वर को प्यारा हो गया।

आध्यात्मिक शक्ति-सम्पन्न योद्धा : अकाली फूला सिंघ

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने श्री अकाल तख़्त साहिब को सिक्खों के सर्वोच्च न्याय-अधिकरण की प्रतिष्ठा प्रदान की। गुरु जी यहां अपना दरबार सजाते। गुरु जी सुंदर वस्त्र धारण कर, कलगी सजा मीरी-पीरी की दो कृपाणें धारण कर दरबार में हाजिर होते। दरबार में आने वाले सिक्खों तथा अन्य लोगों की समस्याओं एवं विवादों को सुनते और उनका समाधान करते। जनता गुरु जी के न्याय से संतुष्ट होकर लौट जाती। लोग गुरु जी द्वारा की गई व्यवस्था के इतने कायल हो गये कि उन्होंने लाहौर और दिल्ली की ओर झांकना भी बंद कर दिया। वे शाही काज़ियों के पास मुकद्दमें लेकर जाने के बजाय श्री अकाल तख़्त साहिब पर आते और गुरु छठम पातशाह के न्याय को सिर-माथे धर कर राज़ी-खुशी अपने-अपने घर को लौट जाते।

छठम पातशाह ने श्री अकाल तख़्त साहिब को जो सर्वोच्च सिक्ख न्यायालय की प्रतिष्ठा प्रदान की, उसकी रक्षा उनके पश्चात् गुरु साहिबान और जत्थेदार सिंघों ने प्राण-प्रण से की। जत्थेदार सिंघों में से सर्वाधिक महत्वपूर्ण नाम अकाली फूला सिंघ का है।

जन्म एवं प्रारंभिक जीवन : अकाली फूला सिंघ का जन्म निशान वालियां मिसल के सरदार ईशर सिंघ के घर गांव शीहां (बांगर, हरियाणा) में सन् १७६१ ई. में हुआ। सरदार ईशर सिंघ सन् १७६२ ई. में अब्दाली से जंग के समय ज़ख़्मी हो गये थे जिसके कारण जल्द ही अकाल प्रस्थान कर गये।

अकाली फूला सिंघ का पालन-पोषण सरदार ईशर सिंघ के एक अत्यंत निकटवर्ती मित्र ने किया। अकाली फूला सिंघ को धर्म-शिक्षा और शस्त्र-शिक्षा एक साथ दी गई, इसलिए बड़े होकर अकाली फूला सिंघ न सिर्फ उच्च कोटि के साधक बने बल्कि एक महान योद्धा के रूप में भी उभरे।

अकाली फूला सिंघ ने सरदार नरैण सिंघ के जत्थे से अमृत की दात प्राप्त की और जत्थे के साथ श्री अनंदपुर साहिब में ही रहना शुरू कर दिया। अकाली फूला सिंघ इतने प्रभावी व्यक्तित्व वाले निकले कि सरदार नरैण सिंघ के अकाल प्रस्थान के बाद जत्थे ने आपको सरदार स्वीकार कर लिया।

श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार के रूप में : सन् १८०० ई. में अकाली फूला सिंघ के जत्थे ने श्री अमृतसर को अपना सदर मुकाम बनाया। यहां रहते हुए आपने एक प्रभावी मुहिम चलाई तथा श्री अकाल तख़्त साहिब और अनेक अन्य गुरुद्वारा साहिबान को लोभी महंतों के चंगुल से मुक्त करवाया। इसी समय अकाली फूला सिंघ को श्री अकाल तख़्त साहिब का जत्थेदार नियुक्त किया गया।

छठम पातशाह ने श्री अकाल तख़्त साहिब का निर्माण श्री हरिमंदर साहिब के सामने इसीलिए करवाया था ताकि राजनीति पर धर्म का नियंत्रण सदैव बना रहे। सत्ता के मद में चूर होकर राजसी लोग अक्सर कदाचार-भ्रष्टाचार में लिप्त हो जाते हैं। छठम गुरु पातशाह ने सिक्खों को राजनीतिक शक्ति प्रदान करते समय इस भीषण 'रोग' से बचे रहने का प्रबंध भी कर दिया था।

श्री अकाल तख़्त साहिब अकाल पुरख का वह न्यायालय है जहां पंथ की मर्यादा और परंपरा से

*१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१

विचलित हुए लोग संगत के सम्मुख आकर अपनी गलतियां बख़्शवाते हैं और जोड़ों (जूतों) की सेवा तथा लंगर की सेवा जैसे सेवा-कार्य कर अपने मन में पनप उठे अहंकार एवं मद को विनम्रता व हलीमी के द्वारा नष्ट करते हैं।

श्री अकाल तख़्त साहिब की हजूरी में सब समान हैं, भले कोई आम आदमी हो या कोई राजा-महाराजा।

छठम पातशाह ने श्री अकाल तख़्त साहिब को जो सर्वोच्च न्यायालय का रुतबा दिया और इसके न्याय को जो प्रतिष्ठा प्रदान की, जत्थेदार अकाली फूला सिंघ ने उस सम्मान एवं प्रतिष्ठा का पालन पूरी निष्ठा, समर्पण व स्पष्टवादिता से किया।

महाराजा रणजीत सिंघ और मोरां बेगम का मामला : समय महाराजा रणजीत सिंघ के शासन-काल का था। महाराजा पर एक गायिका-नर्तकी मोरां बेगम के प्रति अवांछित झुकाव के आरोप लगे। ऐसे संवेदनशील मसले पर अकाली फूला सिंघ ने पूरी निडरता और दिलेरी के साथ महाराजा को मोरां बेगम के मामले में श्री अकाल तख़्त साहिब पर हाज़िर होकर भूल बख़्शवाने का आदेश दिया।

महाराजा रणजीत सिंघ श्री अकाल तख़्त साहिब की प्रभुता स्वीकार करते हुए जत्थेदार अकाली फूला सिंघ के आदेश के अनुसार साधारण कपड़े पहनकर, पैदल चलकर श्री अकाल तख़्त साहिब के सम्मुख नत्मस्तक होने आये।

महाराजा ने मोरां बेगम के साथ अपने संबंधों को स्वीकार किया और अपने अपराध के लिए क्षमा-याचना की।

जत्थेदार अकाली फूला सिंघ ने महाराजा को नंगी पीठ पर सौ कोड़े लगवाने, एक दिन संगत के जोड़े अर्थात् जूतों की सफाई करने और एक दिन लंगर के बर्तन साफ करने की सजा सुनाई।

महाराजा नंगी पीठ कर कोड़े खाने के लिए तैयार हो गये। जनता ने अकाली फूला सिंघ से आग्रह किया उसके बाद महाराजा को सज़ा से माफी मिली।

इसके पश्चात भी जब कभी आवश्यकता पड़ी, जत्थेदार अकाली फूला सिंघ महाराजा को निरंतर दिशा-निर्देश देने से नहीं चूके।

खालसा राज का रक्षक : अकाली फूला सिंघ महान योद्धा भी थे। आप महाराजा के प्रमुख सेनापतियों में से एक रहे। अकाली जी ने अपने जत्थे के साथ महाराजा के लिए कई जंगें जीती। मुलतान की जंग के समय जब खालसा फौज मुसीबत में फंस गई तो महाराजा ने अकाली जी के पास आकर अर्ज की। अकाली जी ने बड़ी निडरता के साथ महाराजा की डोगरे सरदारों पर अंध निर्भरता की भर्त्सना की और उन्हें इन गलतियों के लिए कड़ी फटकार लगाई। अंततः अकाली फूला सिंघ के जत्थे की मदद से ही मुलतान की फतह प्राप्त हुई।

मुलतान विजय के बाद महाराजा रणजीत सिंघ ने अकाली फूला सिंघ को 'खालसा राज दा राखा' (रक्षक) कह कर सम्मानित किया।

सारांश : अकाली फूला सिंघ महान आध्यात्मिक शक्ति-सम्पन्न योद्धा थे। आपने जत्थेदार के रूप में श्री अकाल तख़्त साहिब की सर्वोच्चता को पूरी तरह से बरकरार रखा। अकाली जी ने सर्वोच्च न्यायिक संस्था और पंथ को दिशा-निर्देश देने वाली पीठ के रूप में श्री अकाल तख़्त साहिब के महान् सम्मान को अपनी निडरता व दिलेरी से कायम रखा।

अकाली जी के लिए पंथ की चढ़दी कला, मर्यादा और परंपरा ही सब कुछ थी। हर हाल में पंथ की बेहतरी ही आपका उद्देश्य था। बिना किसी स्वार्थ और भय के अकाली जी ने पूरी निष्ठा के साथ पंथ की भलाई के लिए फैसले लिए।

अकाली फूला सिंघ ने गुरु साहिबान द्वारा स्थापित श्री अकाल तख़्त साहिब की शक्तियों का सदुपयोग करते हुए इसकी प्रतिष्ठा को सदा चार चांद ही लगाए ।

खालसाई त्यौहार : होला महल्ला

*– स. दलजीत सिंघ**

अकाल पुरख को जब धरती पर तरस आया तो उसने श्री गुरु नानक साहिब को अपनी निरंकारी ताकत के साथ मालामाल कर सत्य की स्थापि के लिए भेजा। श्री गुरु नानक साहिब की निरंकारी ज्योति ने समयानुसार चोले (शरीर) बदल कर संसार का नेतृत्व किया। इसके पीछे जो राज़ (रहस्य) महसूस होता है वो यह है कि मानवीय मानसिकता और व्यवहार में परिवर्तन कहीं गलत दिशा में न चल पड़े। उसे अपनी मंज़िल का निशान अवश्य नज़र आता रहे अर्थात् उसकी चेतना में अपने शिखर के पड़ाव का ख़्याल बना रहे। इसमें कोई दो राय नहीं कि गुरु साहिब धरती को पूर्ण मानव की रहमत देने के लिए सिलसिलेवार चोले (शरीर/दसगुरु) भी बदलते रहे और अपने अकाल पुरखी सिद्धांत को भी आगे बढ़ाते रहे। समय आने पर परमात्मा की मर्ज़ी और मौज को ख़ालसा के रूप में प्रकट कर साहिब-ए-कमाल ने धरती को पूर्ण खालिस पुरुषों की बादशाहत के साथ निवाजा। ये खालिस पुरुष वे हैं जिन्होंने समाज को आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनीतिक क्रांति के माध्यम से नयी दिशा प्रदान करनी थी। ख़ालसे का अस्तित्व प्रकट होने से पहले धरती पर जो भी धारायें लोगों को प्रभावित करती हैं वे मानव को बाहरी और भीतरी तल पर बाँट कर देखती हैं, संसार और निरंकार में अंतर दिखाती हैं। गुरु साहिब इस विभक्त ज़िंदगी को चढ़दी कला वाली नुहार प्रदान कर नयी चेतना देते हैं। मानव ने जो कारगुज़ारी धरती पर रहते हुए करनी है उसे निरंकार से अलग कर देखना दयनीय है।

खालसा परमात्मा की मौज का साकार रूप है, जिसे सुंदरता और स्वरूप दसवें पातशाह ने अकाल पुरख के हुक्मानुसार प्रदान किये हैं। इसकी हर क्रियात्मक गतिविधि चढ़दी कला और रूहानियत में भीगी पेश होती है। दसवें पातशाह ने ख़ालसे को मेलों, जलसों में मौज-मस्ती या वक्त-गुज़ारी के लिए एकत्रित होने की प्रेरणा नहीं दी, बल्कि इन जलसों को सतिसंगत की रूहानियत के साथ रूह की चढ़दी कला और आनंद के स्रोत के रूप में स्थापित किया है। गुरु खालसा के पर्व, त्यौहार, यादगारी सिक्के खालसा पंथ को नयी चेतना और ईश्वरीय आनंद से भरते हैं। वे अपने सतिगुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पवित्र हजूरी में जुड़ कर ईश्वरीय गुणों के साथ रिश्ता कायम करने के लिए उमंग लेकर उत्साहित नज़र आते हैं। दुनियावी तौर पर केवल मनोरंजन के लिए चली आ रही परंपरा को एक ख़ास नज़रिए और प्रसन्नता के साथ केवल भरते ही नहीं, बल्कि उसके रूहानी रहस्य को प्रकट भी करते हैं।

होला महल्ला ख़ालसे का अत्यंत चढ़दी कला का पर्व है, जो बसंत ऋतु में होली से अगले दिन विशेषत : श्री अनंदपुर साहिब में मनाया जाता है। डॉ. रतन सिंघ (जग्गी) के अनुसार पहले यह सात-दिवसीय समागम था, जिसमें दीवान सजते, कथा-कीर्तन होता, वारें गाई जातीं, अनेक तरह की फ़ौजी कवायदें या मशकें होती। हर तरफ़ चढ़दी कला का माहौल बना रहता। इन सभी कार्यवाहियों में गुरु साहिब रुचिपूर्वक शामिल होते और सिक्खों का उत्साह

*भूतपर्व लेक्चरार, शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज, श्री अमृतसर— १४३००५

बढ़ाते। अब यह तीन दिनों का त्यौहार बन गया है जो होली से एक दिन पहले और एक दिन बाद (फागुन सुदी चौदह से चेत्र वदी एक तक) विशेष तौर पर मनाया जाता है।[१] इस त्यौहार की शुरुआत कलगीधर पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ ने होलगढ़ किले पर दीवान सजा कर संवत् १७५७ चेत्र वदी एक को की। इसे 'होला महल्ला' नाम दिया।[२]

होला महल्ला के अर्थ करते हुए भाई कान्ह सिंघ नाभा इसे हमला और जाय हमला (हमले की जगह) कहते हैं। उनके अनुसार, ''श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ख़ालसे को शस्त्र और युद्ध-विद्या में निपुण करने के लिए यह रीति चलाई थी। दो दल बना कर प्रधान सिंघों के नेतृत्व में एक विशेष स्थान पर कब्ज़ा करने के लिए हमला करना। कलगीधर पातशाह स्वयं इस कृत्रिम जंग का करतब देखते और दोनों दलों को शुभ शिक्षा देते थे। जो दल कामयाब होता उसे दीवान में सिरोपे प्रदान करते थे।[३]

होला महल्ला चाहे त्यौहार की भांति मनोरंजक दृश्यों या व्यस्तताओं के प्रति संकेत करता प्रतीत होता है मगर इसका असली रूप गहरी बुद्धिमत्ता और दूरअंदेशी की सूक्ष्म समझ का प्रकटावा करता है। गुरु साहिब ख़ालसे के लिए आम दुनियावी धरातल की स्थूल विभिन्नता और मनोरंजन वाली परंपरागत रीति को नये विकासमयी एवं विस्मादमयी माहौल में सृजित कर इसे मानवता का निरभउ व निरवैर बादशाह बनाना चाहते हैं। ये वे चेतन ताब्यादार (आज्ञाकार) होंगे, जो बाहरी रसों-कसों से ऊपर उठ कर, नयी पैड़ के निशान छोड़, संसार का नेतृत्व करेंगे। होला महल्ला कोई मनोरंजन वाला मेला नहीं, इसके पीछे गुरु पातशाह की जो सोच थी उसके बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए डॉ. रतन सिंघ जग्गी कहते हैं— ''यह वास्तव में सिक्ख सैनिकों को अभ्यास करवाने के लिए एक बनावटी युद्ध होता था। सैनिकों को दो दलों में बाँट कर एक दल को सफ़ेद और दूसरे को केसरी वस्त्र पहनने के लिए कहा जाता था। बनावटी जंग के भी कई रूप होते थे। मुख्य तौर पर दोनों दलों को लोहगढ़ पर कब्ज़ा करने के लिए प्रेरित किया जाता था। जो दल पहले कब्ज़ा करता उसे इनाम और सिरोपे दिए जाते या फिर एक दल को लोहगढ़ पर काबिज़ बताया जाता और दूसरे दल वाले काबिज़ दल से किला छीनने का प्रयास करते। जीतने वाले दल को खूब इनाम दिए जाते।[४]

गुरु पातशाह ने ख़ालसे को जिस अमीरी के साथ निवाजा है उसकी तुलनात्मक शख्सियत ढूंढना बहुत मुश्किल है। इस संबंधी विचार का कारण बड़ा स्पष्ट है कि खालसा परमात्मा की मौज में से परमात्मा के माध्यम से प्रकट हुआ प्रत्यक्ष परमात्मा ही है। ईश्वरीय रहमतों का पात्र रूहानी ज़िंदादिली के साथ, एक रस, हुक्म की तामीर करने वाला, बेपरवाह आशिक, अपने महबूब के लिए बेहद प्रेम-रस से भरा, चढ़दी कला में विचरण करने वाला खालसा जब दुनियावी धरातल पर कोई पर्व मनाता है तो वह अपनी अलग पहचान स्थापित करता है। गुरु दसम पातशाह ख़ालसे को शस्त्र और त्यौहार-अभ्यास के अवसर प्रदान करते हैं। उनका मकसद सिक्ख को हर पल चैतन्य रखने का है। वह चेतना संसार और निरंकार दोनों के प्रति बराबर बनी रहनी चाहिए। इसीलिए साहिब ने मिथिहासिक होली को ऐतिहासिक होला महल्ला के रूप में मनाने की नयी रीति चलाई।

ऐतिहासिक प्रमाणों के द्वारा बड़े स्पष्ट तौर पर सिंघों का विलक्षण और हैरान करने वाला शख्सियत-निर्माण सामने आता है। यही गुरु की बख्शिश और परमात्मा की मौज के साथ सृजित नवीन खालसाई पुरुषों की गवाही बनती है। बड़े-बड़े बलवान कहे जाने वाले बादशाहों की मानसिक पीड़ा इसकी गवाही बन कर पेश होती है।... मेरा नाम नादिर ज़ालिम है।

मैंने बड़े-बड़े राक्षस सीधे कर दिए हैं। मुझ बब्बर शेर की दाढ़ में से मांस लेने वाले वे कौन हैं?[५] किसी ताकतवर बादशाह की दहशत के बावजूद उसके गिरेवान को हाथ डालने वाली हिम्मत रखने वाले कितने रूहसार होंगे? इसका अंदाज़ा सहज ही लगाया जा सकता है।... जहांपनाह! यह एक अजब ढंग का सिंघ नाम खालसा पंथ है। इन सिंघों का गाँव, देश, घर-घाट, किला, कोट कोई नहीं। बरसाती पौधों की तरह अपने आप कहाँ से निकल कर पले-पलाए इस मज़हब में आ मिलते हैं, यह तो खुदाई चश्मा समझो।[६] खालसे का हर उठाया कदम कोई ईश्वरीय अदब धरती पर पेश कर रहा होता है। ज़ालिम की अपनी रूह उसकी ज़ुबान के माध्यम से इसकी गवाही खुद भरती है।... जिस प्रकार हम हिंदुओं को मारना सुकृत्य समझते हैं, इसी तरह ये ज़ुल्म का नाश करना अपना धर्म समझते हैं।[७]

खालसा के पर्व अपने आप में मात्र मनोरंजन नहीं बल्कि धरती के निवासी मनुष्यों को ईश्वरीय हुक्म और अपने कर्त्तव्यों के प्रति चेतन रहने की प्रेरणादायक ख़ुराक हैं।

इस तरह महसूस होता है जैसे परमात्मा अपने किसी ख़ास नियम को बहुत संजीदगी के साथ गुरु साहिब के माध्यम से धरती पर प्रकट कर रहा है। धरती इबादती अदब में प्रभु की यह मौज मौजी प्रियतम के माध्यम से अपने आंगन में घटित होती देख कर विस्मादित होती है। वनस्पति, चाँद, सूरज, तारे, पहाड़, पक्षी सब इस विस्मयकारी घटनाक्रम से प्रभावित हुए प्रतीत होते हैं। बसंत के आगमन से वनस्पति रोमांचित हो उठी, मन रोमांचित हुआ। सारा ब्रह्मांड ही आनंदित और रोमांचित नज़र आता है। मानव-स्वभाव रोमांचित होता हुआ किसी रंग में रंगने के लिए लालायित अपनी संकुचित समझ के कारण बाहरी शोख रंगों में अपना आप रंग कर अपने अंदरूनी भाव प्रकट करता हुआ झूमर पेश करता प्रतीत होता है। कलगियां वाले पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ बसंत की इस प्राकृतिक सुन्दरता वाली ऋतु में ख़ालसे की मानसिकता अंग को ईश्वरीय बाणी की रूहानियत में रंगने के साथ-साथ वीर रसी जलाल के साथ रंगे जाने की प्रेरणा से भरते हैं।

समय के बीतने के साथ-साथ धरती पर स्थापित मर्यादाओं में स्वाभाविक परिवर्तन आता है। इससे कई बार वास्तविकता धुंधली हो जाती है और नकल अपना नया रूप नये तरीके से पेश करती है। चेतन कौमों को अपनी विरासत के प्रति वफ़ादारी के लिए नकल से सावधानी लाज़िमी है। खालसा पंथ को मौजूदा समय में बड़ी जागृति के साथ गुरुपर्व और त्यौहार मनाना जारी रखना चाहिए। गुरु साहिब द्वारा प्रदत्त खालिस रहनुमाई को खालिस रूप में ही क्रियात्मकता देनी चाहिए। इसमें से रूहानियत और दानिशपन झलकना लाज़िमी है। ख़ालसे ने ईश्वरीय सरूर में रंग कर शूरवीरता हासिल करनी है अ ैर अपनी ताकत को सरबत्त के भले के लिए ख़र्च करना अपना परम उद्देश्य समझना है।

हवाला-सूची :

१. डॉ. रतन सिंघ (जग्गी), सिक्ख पंथ विश्व कोश भाग प्रथम, गुर रत्न पब्लिशर्स, पटियाला, २००५, पृष्ठ ४४०.
२. भाई कान्ह सिंघ नाभा, महान कोश, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, पाँचवी बार, १९९०, पृष्ठ २८३.
३. उक्त
४. डॉ. रतन सिंघ (जग्गी), सिक्ख पंथ विश्व कोश, भाग प्रथम, पृष्ठ ४३९-४०.
५. ज्ञानी गिआन सिंघ, तवारीख गुरू खालसा, भाग दूसरा, भाषा विभाग पंजाब, १९७०, पृष्ठ १३९.
६. उक्त।
७. उक्त।

जिसहि निवाजे सो जनु सूरा

-डॉ. परमजीत कौर*

'सूरा' का अर्थ है— वीर या बलवान, जो कभी हारता नहीं, कमजोर नहीं पड़ता। चाहे उसकी लड़ाई न्याय की रक्षा के लिए शत्रु के साथ युद्ध के मैदान में हो, चाहे अपने अधिकार के लिए हो, चाहे शरीर रूपी किले में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों की निवृत्ति के लिए अपने मन के साथ हो। भाई साहिब भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार, ''जो लोग कायरता को मन में कभी नहीं आने देते, जंग में शत्रु को पीठ नहीं दिखाते तथा विषय-विकारों पर विजय प्राप्त करते हैं वे सब सम्मानयोग्य शूरवीर हैं।'' (गुरमत मारतंड, भाग १, पृष्ठ १८०)

श्री गुरु नानक देव जी का कथन है कि जो लोग जीवित रहते हुए प्रभु की दृष्टि में कबूल होकर मरते हैं, वे शूरवीर हैं। उनका मरण भी प्रशंसनीय है :

मरणु न मंदा लोका आखीऐ जे कोई मरि जाणै ॥२॥
मरणु मुणसा सूरिआ हकु है जो होइ मरनि परवाणो॥
सूरे सेई आगै आखीअहि दरगह पावहि साची माणो॥
दरगह माणु पावहि पति सिउ जावहि आगै दूखु न लागै॥
करि एकु धिआवहि तां फलु पावहि जितु सेविऐ भउ भागै॥
ऊचा नही कहणा मन महि रहणा आपे जाणै जाणो॥
मरणु मुणसां सूरिआ हकु है जो होइ मरहि परवाणो॥ (पन्ना ५७९)

परमात्मा की दृष्टि में कबूल होने के लिए नाम-सिमरन करना बहुत आवश्यक है। जिनको हरि-रंग लग जाता है, जो परमात्मा को सर्वव्यापक जानते हैं, अहंकार नहीं करते, सदा परमात्मा को स्मृति में रखते हैं, मन को वश में कर लेते हैं, वही सूरमे बनते हैं :

— जा कउ हरि रंगु लागो इसु जुग महि
सो कहीअत है सूरा॥
आतम जिणै सगल वसि ता कै
जा का सतिगुरु पूरा॥ (पन्ना ६७९)
— नानक सो सूरा वरीआमु जिनि विचहु दुसटु अहंकरणु मारिआ॥ (पन्ना ८६)

परमात्मा के साथ सम्बंध बनाने के लिए, सिमरन करने के लिए मन को वश में करना बहुत जरूरी है। प्रभु तभी अंदर दिखायी देता है

*६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— १३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६

जब सहज अवस्था हो :

ठाकुरु गाईऐ आतम रंगि ॥ (पन्ना ६८०)

मन को भटकने नहीं देना चाहिए। सहज-अवस्था परमात्मा की कृपा से प्राप्त होती है। अहंकार के अधीन होकर, मात्र अपने ज्ञान या अपनी बुद्धिमता से कोई भक्त नहीं बन सकता। मन चंचल है, बाहर भटकता रहता है। मन को वश में करने के लिए पांच विकारों से टक्कर लेनी पड़ती है। भक्त कबीर जी शरीर रूपी किले का चित्रण करते हैं कि शूरवीर ने शरीर रूपी किले को जीतना है। बलशाली माया का आश्रय लेकर, पांच कामादि विकार, ईर्ष्या निंदा आदि की फौज लेकर लड़ने कि लिए तैयार है। काम इस किले के दरवाजे का मानों स्वामी है। दुख तथा सुख पहरेदार हैं। पाप, पुण्य किले के दरवाजे हैं। क्रोध किले का चौधरी है। किले में मन रूपी राजा आकी होकर बैठा है। जीभ का चस्का रूपी कवच मन रूपी राजा ने पहना हुआ है। ममता का टोप पहना है। दुर्मति की मानों कमान कसी हुई है। तृष्णा के तीर अंदर ही अंदर कसे हुए हैं। ऐसे किले को जीतना है जो बहुत कठिन काम है। भक्त कबीर जी कहते हैं कि जब मैंने प्रभु-प्रेम का पलीता लगाया, ध्यान लगाया, सहज अवस्था में पहुंच कर अपने अंदर प्रभु की ज्योति जगायी तो मैं सफल हो गया। सत्य-संतोष के सहारे उस फौज के साथ लड़ने लग गया। सतिगुरु के सत्संग की सहायता से किले का बागी राजा (मन) पकड़ लिया :

किउ लीजै गढु बंका भाई ॥
दोवर कोट अरु तेवर खाई ॥१ ॥ रहाउ ॥
पांच पचीस मोह मद मतसर आडी परबल माइआ ॥
जन गरीब को जोरु न पहुचै कहा करउ रघुराइआ ॥१ ॥
कामु किवारी दुखु सुखु दरवानी पापु पुंनु दरवाजा ॥
क्रोधु प्रधानु महा बड दुंदर तह मनु मावासी राजा ॥२ ॥
सवाद सनाह टोपु ममता को कुबुधि कमान चढाई ॥
तिसना तीर रहे घट भीतरि इउ गढु लीओ न जाई ॥३ ॥
प्रेम पलीता सुरति हवाई गोला गिआनु चलाइआ ॥
ब्रहम अगनि सहजे परजाली एकहि चोट सिझाइआ ॥४ ॥
सतु संतोखु लै लरने लागा तोरे दुइ दरवाजा ॥
साधसंगति अरु गुर की क्रिपा ते
पकरिओ गढ को राजा ॥५ ॥
भगवत भीरि सकति सिमरन की
कटी काल भै फासी ॥
दासु कमीरु चढ़िओ गढ़ ऊपरि
राजु लीओ अबिनासी ॥ (पन्ना ११६१)

गुरु का आश्रय लिये बिना, प्रभु की कृपा के बिना बलशाली कामादि के साथ नहीं लड़ा जा सकता। जब अकाल पुरख की कृपा होती है तभी

मनुष्य गुरु-शबद की विचार करता है, गुरमत के अनुसार जीवन बनाने का यत्न करता है, सिमरन के रास्ते को अपनाता है तथा कामादि को जीतकर मन को वश में करके प्रभु की रजा में रहना सीख लेता है और शूरवीर बन जाता है :

— जिन कउ क्रिपालु होआ प्रभु मेरा से लागे गुर की बाणी ॥ (पन्ना ६०८)

— मेरा मनु लागा है राम पिआरे ॥
दीन दइआलि करी प्रभि किरपा वसि कीने पंच दूतारे ॥ (पन्ना ६७०)

— सूरबीर वरीआम किनै न होड़ीऐ ॥
फउज सताणी हाठ पंचा जोड़ीऐ ॥
दस नारी अउधूत देनि चमोड़ीऐ ॥
जिणि जिणि लैन्हि रलाइ एहो एना लोड़ीऐ ॥
त्रै गुण इन कै वसि किनै न मोड़ीऐ ॥
भरमु कोटु माइआ खाई कहु कितु बिधि तोड़ीऐ ॥
गुरु पूरा आराधि बिखम दलु फोड़ीऐ ॥
हउ तिसु अगै दिनु राति रहा कर जोड़ीऐ ॥
(पन्ना ५२२)

— गुर का सबदु मने सो सूरा ॥ (पन्ना १०२३)

प्रभु की कृपा हो जाये तो मनुष्य माया से टक्कर लेने में समर्थ हो जाता है, दुनिया के भय तथा सहम को दूर कर लेता है। माया तथा कामादि विकारों के आक्रमण के समक्ष स्थिरचित्त, अडोल रह सकता है। माया से विरक्त होकर गुरमत के अनुसार चलता हुआ सिमरन की शक्ति से स्वार्थ तथा परार्थ को एक समान देखता है। उसकी दुविधा समाप्त हो जाती है, मेर-तेर का भेद नहीं रहता :

— जो सूरा तिस ही होइ मरणा ॥
जो भागै तिसु जोनी फिरणा ॥
जो वरताए सोई भल मानै बुझि हुकमै दुरमति जालीऐ ॥ (पन्ना १०१९)

— नदरि करे ता सिमरिआ जाइ ॥
आतमा द्रवै रहै लिव लाइ ॥
आतमा परातमा एको करै ॥
अंतर की दुबिधा अंतरि मरै ॥ (पन्ना ६६१)

प्रभु की दया से उच्च आत्मिक अवस्था बनती है, हरि-रंग लगता है तथा प्रभु की कृपा से ही यह अवस्था बनी रहती है। आम तौर पर मनुष्य रिद्धियों-सिद्धियों के चक्कर में पड़ जाता है। इस भ्रमित करने वाली अवस्था में वही मनुष्य संभल सकता है, स्थिर रह सकता है, जिसकी परमात्मा स्वयं सहायता करता है। वही शूरवीर, सूरमा कहलाता है जो प्रभु की कृपा से डगमगाता नहीं :

— जिसहि जराए आपि सोई अजरु जरै ॥
(पन्ना ९५८)

— हरि धन को वापारी पूरा ॥
जिसहि निवाजे सो जनु सूरा ॥ (पन्ना ११४)

सिक्ख धर्म में गुरुआई परंपरा

*-डॉ. तेजिंदर पाल सिंघ **

सिक्ख धर्म में 'गुरु' का केंद्रीय स्थान है। इसके सैद्धांतिक और व्यवहारिक पक्ष का महत्वपूर्ण अंग 'गुरु' है। इसके बिना सिक्ख धर्म की कल्पना भी नहीं की जा सकती। सिक्ख धर्म का समूचा दर्शन आस्था, इतिहास, रहित, सभ्याचार अर्थात् हर एक संकल्प, सिद्धांत और व्यवहार गुरु पर ही आधारित है। गुरमत के अनुसार 'गुरु', समय-स्थान और कारण-कार्य में बंधा कोई सांसारिक व्यक्ति नहीं, बल्कि वह तो परमात्मा की 'ज्योति' का प्रकट रूप है, ईश्वरीय करामात है।

भाई गुरदास जी कहते हैं कि जगत में जिस समय पाप छा गया, दया समाप्त हो गई और धर्म की हानि हो गई तो दाता प्रभु ने दीन-दुखियों की पुकार सुन कर श्री गुरु नानक देव जी को धरती पर भेजा :

सुणी पुकारि दातार प्रभु गुरु नानक जग माहि पठाइआ। *(वार १:२३)*

श्री गुरु नानक देव जी का आगमन समूचे विश्व की संपूर्ण तबदीली का सूचक है, जो किसी दैवी घटना से कम नहीं। श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाशमान होने से ही सिक्ख धर्म का आरंभ होता है। सिक्ख सिद्धांत के अनुसार वे प्रभु-दरबार से भेजे पूर्ण पुरुष हैं। यहाँ एक बात स्पष्ट करनी बनती है कि बेशक श्री गुरु नानक देव जी से पहले और उनके समकाल में भी कई अन्य महापुरुष हुए हैं, परंतु श्री गुरु नानक देव जी उनमें सबसे बड़े हैं :

सभ ते वडा सतिगुरु नानकु जिनि कल राखी मेरी॥

(पन्ना ७५०)

श्री गुरु नानक देव जी 'आदि गुरु' के रूप में 'पारब्रह्म परमेसर' से 'गुर परमेसर' होकर अवतरित होते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से संसार में जितने भी अवतार, ऋषि-मुनि, पीर, पैग़म्बर, रसूल, महापुरुष आदि हुए हैं, सभी किसी न किसी को गुरु धारण कर ज्ञान प्राप्त करते रहे हैं। इसके विपरीत श्री गुरु नानक देव जी को गुरु धारण करने की आवश्यकता नहीं पड़ी, क्योंकि अकाल पुरख वाहिगुरु की गुरु-स्वरूप ज्योति ही मूर्तिमान होकर, 'नानक' नाम धारण कर मातृ लोक में प्रकट हुई :

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ॥

(पन्ना १४०८)

'पुरातन जन्म साखी' में इस बारे में इस तरह वर्णन दर्ज है :—

. . . आगिआ परमेसर की होई, जो नानक

**असिस्टेंट प्रोफेसर, यूनिवर्सिटी कॉलेज, मीरांपुर (पटियाला)— १४७१११ फोन : ९९८८०-०८७३३*

भगतु हाजरु होआ, ताँ अंम्रित दा कटोरा भरि करि आगिआ नाल मिलिआ। हुकमु होआ: 'नानक! इहु अंम्रितु मेरे नाम का पिआला है, तू पीउ।' तब गुरू नानक तसलीम कीती, पिआला पीता। साहिबु मिहरवानु होआ : 'नानक मै तेरे नाल हाँ। मैं तेरे ताई निहालु कीआ है, अरु जो तेरा नाउ लेवेगा सो सभ मै निहालु कीते हैनि।... तबि फिरि आगिआ आई। हुकम होआ : 'नानकु जिसु उपरि तेरी नदरि, तिसु उपरि मेरी नदरि। जिसु उपरि तेरा करमु, तिसु उपरि मेरा करमु। मेरा नाउ पारब्रहमु परमेसरु, अर तेरा नाउ गुरू परमेसरु' : तब गुरू नानक पैरी पइआ, सिरुपाउ दरगाहों बाबे नूं मिलिआ।[1]

श्री गुरु नानक देव जी को गुरुआई अकाल पुरख ने बख्शिश की और उन्होंने यही गुरुआई बख्शिश की परंपरा में ढाल कर आगे श्री गुरु अंगद देव जी को दी। श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अंगद देव जी में अंतर केवल शरीर का था, 'ज्योति' की दृष्टि से दोनों एक थे :

जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ॥ *(पन्ना ९६६)*

ऐतिहासिक तौर पर श्री गुरु नानक देव जी के पश्चात् नानक-ज्योति श्री गुरु अंगद देव जी में आई। यहाँ यह बात स्पष्ट करनी बनती है कि श्री गुरु नानक देव जी को गुरुआई मिलनी निरोल रूप में आध्यात्मिक प्रक्रिया थी, जबकि यही गुरुआई श्री गुरु अंगद देव जी को प्राप्त हुई तो आध्यात्मिक होने के साथ-साथ यह ऐतिहासिक भी बन गई अर्थात् काल के एक ख़ास खंड में बाहरी चिह्नों के सहयोग से श्री गुरु नानक देव जी ने भाई लहिणा जी को संगत की हाज़िरी में अपनी 'ज्योति' उनके हृदय में टिका कर उन्हें गुरुआई प्रदान की।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मौजूद 'रामकली की वार' में से गुरुआई के दिव्य दर्शन होते हैं। वार की चौथी पउड़ी में भाई सता जी बड़े आश्चर्य से बयान करते हैं कि श्री गुरु नानक देव जी ने एक नया रास्ता चलाया। उनका यह बरताव देख कर दुनिया हैरान होकर कहने लगी कि श्री गुरु नानक देव जी ने उलटी गंगा बहा कर यह क्या किया है?

होरिंओ गंग वहाईऐ दुनिआई आखै कि किओनु॥
नानक ईसरि जगनाथि उचहदी वैणु विरिकिओनु॥
(पन्ना ९६७)

दुनिया हैरान इसलिए हुई कि श्री गुरु नानक देव जी ने भाई लहिणा जी के सिर पर गुरुआई का छत्र रख कर उनकी शोभा आसमान तक पहुँचा दी। श्री गुरु नानक देव जी की आत्मा भाई लहिणा जी की आत्मा में समा गई :

लहणे धरिओनु छत्रु सिरि असमानि किआड़ा छिकिओनु॥
जोति समाणी जोति माहि आपु आपै सेती मिकिओनु॥ *(पन्ना ९६७)*

दुनिया के लिए यह नयी रीति थी कि श्री गुरु नानक देव जी ने अपने चेले (सेवक) के समक्ष शीश झुकाया। भाई बलवंड जी भी इस आश्चर्यता के अधीन फरमान करते हैं कि श्री गुरु नानक देव

जी ने धर्म का एक नया राज्य चलाया है। अपने सेवक भाई लहिणा जी को अपने जैसा बना कर गुरु होते हुए अपने सेवक के आगे माथा टेका :

नानकि रजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै॥. . .
गुरि चेले रहरासि कीई नानकि सलामति थीवदै॥
सहि टिका दितोसु जीवदै॥ (पन्ना ९६६)

भाई बलवंड जी के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी ने जब गुरुआई का तिलक भाई लहिणा जी को दिया तो श्री गुरु नानक देव जी की महिमा की बरकत से भाई लहिणा जी की प्रसिद्धि चारों तरफ़ फैल गई। यह सारा दैवी घटनाक्रम था, क्योंकि भाई लहिणा जी के अंदर श्री गुरु नानक देव जी की ही ज्योति ने प्रवेश किया था और उनके जीवन का ढंग (जुगति-युक्ति) भी वही श्री गुरु नानक देव जी वाला था। मानो श्री गुरु नानक देव जी ने अपना शरीर ही बदला था :

लहणे दी फेराईऐ नानका दोही खटीऐ॥
जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ॥ (पन्ना ९६६)

भट्ट मथुरा जी की नज़र में पंच प्रमाण पुरुषों की मूरत का ऐतिहासिक घटनाक्रम केवल आध्यात्मिक है। यह किसी परंपरा का अनुयायी नहीं :

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ॥
ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ॥
(पन्ना १४०८)

विश्व धर्म इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ कि किसी गुरु ने अपने चेले को गुरु स्थापित कर उसके आगे शीश झुकाया हो, परंतु सिक्ख धर्म में घटित इस रहस्यमयी और विलक्षण घटना के बारे में भाई गुरदास जी कहते हैं कि श्री गुरु नानक देव जी द्वारा श्री गुरु अंगद देव जी (भाई लहिणा जी) को गुरु स्थापित करना मानो उलटी गंगा बहाने के तुल्य था :

उलटी गंग वहाईओनि गुर अंगदु सिरि उपरि धारा।
(वार १:३८)

भाई लहिणा जी को अपने जीते-जी गुरुआई बख्शिश कर श्री गुरु नानक देव जी ने एक नया इतिहास रचा। इस ऐतिहासिक सच्चाई को दुनियावी लोग समझ न सके, क्योंकि यह विस्मयकारी घटना थी, जिसके माध्यम से श्री गुरु नानक देव जी ने केवल अपना शरीर ही बदला था :

थापिआ लहिणा जींवदे गुरिआई सिरि छत्रु फिराइआ।
जोती जोति मिलाइ कै सतिगुर नानकि रूपु वटाइआ।
लखि न कोई सकई आचरजे आचरजु दिखाइआ।
काइआ पलटि सरूपु बणाइआ। (वार १:४५)

भाई साहिब बताते हैं कि श्री गुरु अंगद देव जी को गुरुआई बख्शिश करते समय श्री गुरु नानक देव जी ने अपना टिका, सिर का छत्र, सिंघासन, अपनी छाप (शक्ति) आदि दी, जिससे श्री गुरु अंगद की दोही फिर गई :

सो टिका सो छत्रु सिरि सोई सचा तखतु टिकाई।
गुर नानक हंदी मुहरि हथि गुर अंगद दी दोही फिराई। (वार १:४६)

गुरुआई परंपरा :

गुरुआई परंपरा का आरंभ श्री गुरु नानक देव जी द्वारा श्री गुरु अंगद जी को गुरु स्थापित करने से होता है।[२] श्री गुरु अंगद देव जी से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक यह सिलसिला निरंतर और निर्विघ्न जारी रहता हुआ अंतत: ग्रंथ-पंथ को गुरुआई३ मिलने पर समाप्त और स्थापित होता है। सिक्ख धर्म में मिलती गुरुआई परंपरा की विस्तृत विचार नीचे दिए अनुसार है :

गुरुआई परंपरा : उद्देश्य :

गुरुआई परंपरा का पहला उद्देश्य जगत का उद्धार करना है। इसकी पूर्ति के लिए गुरु साहिबान ने दो साधन इस्तेमाल किए हैं— बाणी और अमल (शख्सी जीवन)। बाणी, वाहिगुरु का शबद है, जो गुरु साहिबान की पवित्र आत्मा में से प्रकाशमान होकर उनके मुखारविंद से प्रकट हुआ। बाणी के उपदेश के अलावा सतिगुरु का शख्सी जीवन भी अपने आप में एक महान उपदेश है। ज़िक्रयोग्य है कि जीवन एक कला है, जिसकी प्राप्ति के लिए केवल ज्ञान या सिद्धांत ही काफ़ी नहीं होते, बल्कि किसी कलाधारी की मिसाल और उसके जीवन-स्पर्श की प्राप्ति भी ज़रूरी होती है। सतिगुरु का जीवन महान कलाधारियों का स्पर्श प्रदान करता है। एक बात पक्की है कि केवल सिद्धांतों के साथ ज़िंदगी नहीं चलती। व्यवहारिक जीवन से ही किसी का जीवन बदला जा सकता है। श्री गुरु नानक देव जी ने जो सिद्धांत बताए, उन्हें अपनी ज़िंदगी में अमल में लाकर ही मुकम्मल मिसाल पेश की। उनके पश्चात् हुए नौ गुरु साहिबान ने भी सैद्धांतिक तौर पर दिए उपदेशों की सच्चाई के अलग- अलग पक्षों को व्यवहारिक ज़िंदगी में ढाल कर जीवन-युक्ति की आदर्श मिसालें पेश की।

गुरु-ज्योति :

गुरुआई परंपरा की साझी कड़ी गुरु-ज्योति' है, जिसके बुनियादी पक्ष हैं— 'गुरु-ज्योति' और 'गुरुआई-पद'। गुरु-ज्योति की निरंतरता शारीरिक नहीं, बल्कि आत्मिक है। गुरुआई परंपरा ने दो तथ्य पूरी तरह से स्थापित और स्पष्ट कर दिए— पहला, गुरुआई परंपरा दैवीय है, दुनियावी नहीं। दूसरा, गुरुआई बख्शिश है। श्री गुरु अंगद देव जी से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक समय के अनुसार गुरुआई-प्राप्ति के लिए शरीर ही बदला है, परंतु सभी में ज्योति-स्वरूप (दैवीय गुणों) की ही प्रधानता रही।

सिक्ख धर्म के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी ज्योति रूप हैं :

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ॥

(पन्ना १४०८)

वर्णनीय है कि 'गुरु' शब्द का उपयुक्त बदल 'ज्योति' ही है, क्योंकि बहुत-से विद्वानों ने गुरु के अर्थ 'अंधकार में प्रकाश करने वाला' किये हैं। 'ज्योति' से तात्पर्य भी प्रकाश ही है। भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार 'ज्योति' के अर्थ हैं— प्रकाश, चमक और तेज़।[४] भाई साहिब के अनुसार परमात्मा अपने आपको प्रकाशित करता है, इसलिए उसे 'नूर' अथवा 'ज्योति' आदि शब्दों के साथ व्यक्त किया गया है। गुरु-ज्योति

से तात्पर्य गुरु-आत्मा के उस स्वरूप से है जो परमात्मा के प्रकाश रूप परम सत्ता के साथ समरूपता ग्रहण कर चुका है। यह परमात्मा के साथ एक रूप हुई श्री गुरु नानक देव जी की ज्योति उनके परवर्ती गुरु साहिबान के अलग-अलग शरीरों में प्रवेश होती रही। श्री गुरु अमरदास जी इस ज्योति-मिलाप का वर्णन करते हुए फरमान करते हैं :

नानक गुर ते गुरु होइआ वेखहु तिस की रजाइ ॥
इहु कारणु करता करे जोति जोति समाइ ॥
(पन्ना ४९०)

श्री गुरु नानक देव जी ने भौतिक शरीर के साथ अपनी भीतरी निरंकारी ज्योति को भाई लहिणा जी के शरीर में टिका कर उन्हें 'गुरु अंगद' (श्री गुरु अंगद देव जी) बना दिया। उपरांत उनके समक्ष अपना शीश झुका कर अभिवादन किया। इस तरह करने से श्री गुरु नानक देव जी ने एक नयी मर्यादा स्थापित की। यह ज्योति पहले की तरह ही दूसरे शरीर अर्थात् श्री गुरु अंगद देव जी के माध्यम से अपनी निर्मल किरणें प्रसारित करती रही। यही ज्योति दस स्वरूपों में विद्यमान रही।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बाणीकार भट्ट साहिबान गुरुआई को सदा स्थिर रहने वाला 'राजु जोगु' का तख़्त कहते हैं, जिसकी केंद्रीय कड़ी आत्मिक ज्योति है अर्थात् कलियुग में गुरुआई परंपरा एक ऐसे 'राजु जोगु' का तख़्त है जिसके पहले 'प्रमाणु' श्री गुरु नानक देव जी हैं :

कलिजुगि प्रमाणु नानक गुरु अंगदु अमरु कहाइओ ॥ *(पन्ना १३९०)*

भट्ट कीरत जी के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी की 'दैवी कुल' में भाई लहिणा जी का आगमन होता है। इसी तरह श्री गुरु अमरदास जी उस कुल के अगले 'पातिशाह' हैं। यह कुल (गुरुआई परंपरा) श्री गुरु नानक देव जी के 'प्रसादि' के साथ श्री गुरु अंगद देव जी और उनकी कृपा से श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी या श्री गुरु अरजन देव जी तक चलती है :

नानक प्रसादि अंगद सुमति गुरि अमरि अमरु वरताइओ ॥
गुर रामदास कलुचरै तैं अटल अमर पदु पाइओ ॥
(पन्ना १३९७)

भट्ट साहिबान की नज़र में गुरुआई परंपरा अकाल पुरख द्वारा स्थापित हुई है। परमात्मा इसमें समाया हुआ है :

गुरु नानकु अंगदु अमरु भगत हरि संगि समाणे ॥
(पन्ना १३९८)

भट्ट मथुरा जी की नज़र में पंच प्रमाण पुरुषों की मूर्ति का ऐतिहासिक घटनाक्रम केवल आध्यात्मिक है। यह किसी परंपरा का अनुयायी नहीं :

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ॥
ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ ॥
अंगदि किरपा धारि अमरु सतिगुरु थिरु कीअउ ॥
अमरदासि अमरतु छत्रु गुर रामहि दीअउ ॥
गुर रामदास दरसनु परसि कहि मथुरा अंम्रित बयण ॥
मूरति पंच प्रमाण पुरखु गुरु अरजुनु पिखहु नयण ॥

(पन्ना १४०८)

भाई गुरदास जी की वारों के अध्ययन के उपरांत एक बात स्पष्ट होती है कि भाई साहिब ने गुरुआई परंपरा पर ज्यादा बल दिया है। इस प्रकटावे में उन्होंने बार-बार गुरु-ज्योति की एकता दृढ़ करवाई है। उनके अनुसार गुरु-ज्योति का एक से दूसरे गुरु में समा जाना इस तरह है जैसे दीये से दीया जलता है, पानी में पानी मिलता है :

जोती जाति जगाइ दीपु दीपाइआ।
नीरै अंदरि नीरु मिलै मिलाइआ॥ (वार २०: २)

गुरुआई के अधिकारी :

गुरुआई अधिकार नहीं, केवल बख्शिश है। गुरुआई के अधिकारी के बारे में भाई गुरदास जी संकेत देते हैं कि गुरुआई अकाल पुरख वाहिगुरु की रहमत है :

दाति जोति खसमै वडिआई॥ (वार १: ४६)

अधिकारों का संघर्ष हमेशा अहंकार के अधीन, मोह-माया के अधीन होकर लड़ा जाता है और बख्शिश हमेशा मोह-माया के अहंकार से आज़ाद होकर प्राप्त की जाती है। संसारी गद्दियों के इतिहास में 'गद्दी अधिकार' को विरासत का अधिकार माना जाता था, परंतु श्री गुरु नानक देव जी ने जिस आध्यात्मिक गुरुआई परंपरा का आरंभ किया, उसमें उन्होंने विरासत के अधिकार को हटा कर बख्शिश को टिका दिया। गुरुआई जिस भी गुरु साहिब को प्राप्त हुई, वह बख्शिश रूप में ही प्राप्त हुई, अधिकार रूप में नहीं।

गुरुआई बख्शिश करते समय अपने उत्तराधिकारी का चयन कभी भी लोकतांत्रिक ढंग के साथ नहीं किया गया। गुरुआई बख्शिश करने की यह परंपरा रही है कि हर एक गुरु साहिब ने अपने उत्तराधिकारी का चुनाव स्वयं किया है, चाहे कि उन्होंने अपनी मौजूदगी में उस उत्तराधिकारी को स्थापित न किया हो।[५]

संसारी गद्दियों के इतिहास में गद्दी- अधिकार को विरासत का अधिकार माना जाता था। मुगलों और महाराजा रणजीत सिंघ के समय गद्दी-अधिकार को प्राप्त करने के लिए कैसे पुत्र-पोतों ने एक दूसरे पर जो हमले किये, वे इस बात का संकेत हैं कि गद्दी परंपरा में विरासत का अधिकार प्रधान था। श्री गुरु नानक देव जी ने जिस आध्यात्मिक गुरुआई परंपरा का आरंभ किया, उसमें से उन्होंने विरासत के अधिकार को हटा कर, बख्शिश के सिद्धांत को कायम कर दिया। भाई सता जी और भाई बलवंड जी गुरु-सुपुत्रों के बाग़ी और आकी होने का तथ्य प्रकट करते हैं :

पुत्री कउलु न पालिओ करि पीरहु कंन्ह मुरटीऐ॥
दिलि खोटै आकी फिरन्हि बंन्हि भारु उचाइन्हि छटीऐ॥ (पन्ना ९६७)

सहजता से स्पष्ट हो जाता है कि श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी और श्री गुरु अमरदास जी ने जब अपने पुत्र-पोत्रों को छोड़ कर गुरुआई की बख्शिश सिक्ख सेवकों को दी, तो मोह-माया के अधीन जन्मे-पले पुत्रों का 'गुरू-कउल' (गुरु-हुक्म) के पालन से बागी हो जाना स्वाभाविक था। श्री गुरु नानक देव जी

ने गुरुआई की जो मर्यादा चलाई, बाकी गुरु-शख़्सियतों ने उस मर्यादा पर पूरी दृढ़ता के साथ पहरा दिया।

गुरुआई की कसौटी :

गुरुआई परंपरा का प्रारंभिक कार्य, अपने जीते-जी अपना उत्तराधिकारी गुरु स्थापित करना था। यह पदवी पिता-पुरखी नहीं। भाई गुरदास जी के अनुसार गुरु स्थापित करने का आधार विस्मयकारी था। *(लखि न कोई सकई आचरजे आचरजु दिखाइआ॥)* परन्तु फिर भी गुरुआई बख्शिश करते समय 'सेवा' की विशेष कसौटी रही है। उत्तराधिकारी के चयन के समय केवल उन महापुरुषों को ही गुरु-ज्योति के योग्य स्वीकार किया गया जो सेवा के इम्तिहान में पास हुए। सेवा करने से चेला 'गुरु' बनने के योग्य हो गया। इस तरह गुरुआई और सेवा का आपस में गहरा संबंध है। श्री गुरु नानक देव जी ने अपने पुत्रों और सिक्खों की परीक्षा सेवा के आधार पर ही ली थी। उन्होंने 'गुरु' के हुक्म और सेवा में विश्वास रखने वाले श्रद्धालु सिक्ख भाई लहिणा जी (श्री गुरु अंगद देव जी) को गुरुआई प्रदान की। इस प्रसंग में प्रंशसानीय रूप में प्राप्त साखी है कि श्री गुरु नानक देव जी ने जब भाई लहिणा जी को खेत में से घास की कीचड़ से लथपथ गठरी उठाने के लिए कहा तो भाई लहिणा जी ने बिना देरी किए गठरी सिर पर उठा ली और घर ले गए। गठरी में से गंदा पानी निकलने के कारण उनके कपड़े कीचड़ से गंदे हो गए। यह देख कर माता सुलक्खणी जी उन्हें कहने लगे कि वे काम करवाते समय व्यक्ति की विचार कर लिया करें। उस समय गुरु साहिब ने उत्तर दिया कि ''आप असली रहस्य को नहीं समझीं। हमने तो दीन-दुनिया का ताज (छत्र) इनके सिर पर सजा दिया है। यह कीचड़ नहीं, बल्कि केसर है अर्थात् यह शगुन की बात है। ये लेनदार हैं और मैं देनदार हूं। मेरी और इनकी प्रीति बहुत पुरानी है। ये तो मेरे वारिस हैं। मैं इनके हृदय में बसता हूं। ये मेरे सच्चे मित्र हैं।'' 'गुरबिलास पातशाह ६' का कर्त्ता इस वार्ता को इस तरह बयान करता है :

निज गुरिआई बोझ बिचारी।
लहणे ओर सु द्रिसटि निहारी॥
ततकाल तिन लीन उठाई।
कछु शंका नहि मन मै पाई॥
आगे आगे सतिगुर भए।
पाछे लहणा पोट उठए॥
सतिगुर चरन कमल चित लाई।
तन मन दे अति हरख धराई॥
चोणत चीकड़ बसत्र अपारा।
केसर छिटकयो प्रभू विचारा॥
तिह गुरिआई बोझ दीयो सिरि।
केसर डारयो गुर नानक बरु॥
स्री गुर नानक डेरे आए।
मम दादी विखि बिसमै पाए॥
कहयो तोहि कछु शंक न लजा।
कहयो करत को जगि अस काजा॥[६]

श्री गुरु अमरदास जी को भी गुरु-सेवा के आधार पर ही गुरु स्थापित किया गया। श्री गुरु रामदास जी संबंधी बहुत-सी साखियां सेवा-

भाव के बारे में प्रचलित हैं। श्री गुरु रामदास जी दिन-रात श्री गुरु अमरदास जी की सेवा में उपस्थित रहते थे। इसी सेवा के कारण भाई जेठा जी को गुरुआई की बख़्शिश प्राप्त हुई।

वर्णनीय है कि कई विद्वानों का कहना है कि श्री गुरु रामदास जी के बाद गुरुआई को पैतृक हो गई थी। उनके अनुसार बीबी भानी जी की अपने पिता श्री गुरु अमरदास जी के प्रति अथाह श्रद्धा और सेवा ने गुरुआई को पैतृक बना दिया। इसका कारण केवल ऐतिहासिक प्रसंग में देखना है। कुछ विद्वानों को श्री गुरु रामदास जी के बाद गुरुआई 'सोढियों के घर' में रहने का भ्रम लगता है, जिसके बारे में भाई गुरदास जी भी इशारा करते हैं :

दिचै पूरबि देवणा जिस दी वसतु तिसै घरि आवै।
बैठा सोढी पातिसाहु रामदासु सतिगुरू कहावै।...
फिरि आई घरि अरजणे पुतु संसारी गुरू कहावै।
जाणि न देसाँ सोढीओ होरसि अजरु न जरिआ जावै।
घर ही की वथु घरे रहावै॥ *(वार १: ४७)*

भाई साहिब के उक्त इशारे को लेकर कई विद्वान गलत अर्थ निकाल कर अपने तथ्यों की पुष्टि करते हैं। वर्णनयोग्य है कि सिक्ख-विरोधी तत्वों को गुरमत में जात-पांत की अनुपस्थिति हज़म नहीं होती, इसीलिए वे सिक्खों को धक्के से जात-पांत के मामले में खींचते हैं। इस तंगदिली के कारण ही विरोधियों की तरफ से श्री गुरु रामदास जी की गुरुआई के बारे में उक्त गलत भ्रांतियां फैलाई गई हैं। सैद्धांतिक रूप से भी गुरबाणी में जात-पांत का ज़ोरदार खंडन किया गया है। इस आधार पर श्री गुरु रामदास जी की गुरुआई के बारे में यह धारणा गलत सिद्ध होती है। श्री गुरु रामदास जी फरमान करते हैं :

हमरी जाति पाति गुरु सतिगुरु हम वेचिओ सिरु गुर के॥ *(पन्ना ७३१)*

इसके अलावा 'सिक्ख रहित मर्यादा' के अनुसार अमृत छकने के बाद सिक्ख की पिछली जात-पांत आदि सब ख़त्म हो जाती है।[७] इस संबंधी गुरु-फुरमान है :

सतिगुरु कै जनमै गवनु मिटाइआ॥ (पन्ना ९४०)

गुरुआई को पारंपरिक गद्दी परंपरा में देखने वाले कुछ विद्वान भी गुरुआई परंपरा के इस सिद्धांत को समझने में असमर्थ रहे हैं। गुरुआई कोई विरासती या पैतृक अधिकार नहीं, बल्कि केवल दैवी चयन है।

गुरुआई देने की प्रक्रिया : (रीति)

गुरु साहिबान इस बात से भली-भाँति वाकिफ़ थे कि लोक-मानसिकता जिस बात को स्वीकार करती हो, किसी चीज़ की स्थापि के लिए उसी तरह करना पड़ता है। इसलिए गुरु साहिब ने तिलक और नारियल आदि, जो कि किसी राजा-महाराजा को राजगद्दी देते समय इस्तेमाल किए जाते थे, को गुरुआई देते समय स्वीकार किया। गुरुआई देते समय उत्तराधिकारी के आगे पाँच पैसे और नारियल रख कर शीश झुकाने की रिवायत प्रचलित रही है। इस रिवायत से गुरुआई का असली अधिकारी प्रकट होता था। इस संबंध में भाई संतोख सिंघ लिखते हैं :

पैसे पंच सहित नलीएर।

धरि आगे नंम्रे तिस बेर॥
करी सथापनि आपनी जोति।
सभ गुरु के आई जिम होति॥[८]

W.O Cole के अनुसार नारियल प्रकृति / ब्रह्मांड का सूचक है, जिसके सिर के बाल वनस्पति दर्शाते हैं। इसी तरह पाँच सिक्के (पैसे) पाँच तत्वों (हवा, धरती, आग, पानी और आकाश) के सूचक हैं। गुरुआई बख्शिश करते समय अपने उत्तराधिकारी के सम्मुख ये चीजें रखने से तात्पर्य था कि गुरु साहिब परमात्मा और मानव की रचना के सूचक हैं।[९]

उपरोक्त सार के रूप में कहा जा सकता है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सिद्धांत के अनुसार गुरु के तीन पक्ष हैं— ज्योति, जुगति और काया। ज्योति से तात्पर्य सत्य का प्रकाश या सिद्धांत है। जुगति (युक्ति) वह रहित और नीति है, जिसके माध्यम से सत्य संबंधी मिले प्रकाश या सिद्धांत को जीवन में जीना है। काया वह माध्यम है, जिसकी सहायता से ज्योति की युक्ति धारण की जाती है। गुरुआई के उक्त तीनों ही पक्ष सदा कायम रहे हैं, चाहे इनके नाम व रूप बदलते रहे हैं। अत: कहा जा सकता है कि श्री गुरु नानक देव जी के बाद प्रत्येक गुरु साहिब में ज्योति, युक्ति और काया के तीनों पक्ष मौजूद थे। गुरबाणी या शबद उनकी ज्योति का प्रकाश है। उनके द्वारा की गई नाम-भक्ति व सेवा और अन्य कार्य, उनकी युक्ति का अंग हैं। काया पलट कर गुर-सिक्ख/ गुरु-पंथ, संगत या खालसा में आ गई है।

हवाले और टिप्पणियाँ :

१. पुरातन जन्म साखी, साखी/ पृष्ठ- १०/ ४०- १.

२. W.O. Cole, The Guru in Sikhism, Darton, Longman & Todd Ltd, London, 1982, p. 24.

३. गुरुआई से तात्पर्य है गुरु-पदवी, गुरुता, महान कोश, पृष्ठ ४१९। गुरुआई शबद गुरगद्दी का समानार्थक है, परंतु गुरगद्दी शबद गुरुआई के प्रसंग में सही नहीं बैठता।

४. महान कोश, पृष्ठ ५३६.

५. मिसाल के तौर पर श्री गुरु तेग बहादर साहिब को गुरुआई श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने अपनी मौजूदगी में नहीं दी।

६. ज्ञानी जोगिंदर सिंघ वेदांती और अमरजीत सिंघ (डा.) (सम्पा.), गुरबिलास पातशाही ६, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, १९९८, अध्याय/ बन्द/पृष्ठ- १६/ २२९- ३२/ ५४७.

७. सिक्ख रहित मर्यादा, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, २००८, पृष्ठ ३०.

८. संतोख सिंघ (भाई), श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ (जिल्द ७), भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, १९९१, पृष्ठ २३४८.

९. W. Owen Cole & Piara Singh Sambhi, The Sikhs : Their Religious Beliefs and Practices, Vikas Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi, 1978, p. 104.

धंनु सु ग्रिहु जितु प्रगटी आइ ॥

*-डॉ. मनजीत कौर**

जीवन के सर्वांगीण विकास हेतु पुरुष और नारी दोनों का ही समान महत्व है, लेकिन नारी को हर युग में शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर ही माना गया है। जब पुरुष और नारी जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं तो एक पहिए को कमजोर मानने से गाड़ी सुचारू रूप से भला कैसे चल सकती है! भारतीय समाज प्राचीन काल से ही पितृसत्तात्मक माना गया है, जिसके परिणामस्वरूप स्त्री के कार्यों की धुरी पति की अनुकूलता पर निर्भर बनी रहकर ही घूमती थी। चिन्तकों के चिन्तनानुसार तत्कालीन ग्रंथों में मध्ययुगीन नारी दीन-हीन, सुन्दरी, कामिनी, घर की चारदीवारी में बंद, अशिक्षित मानी गई। यही नहीं, उसे कुलटा, व्यभिचारिणी व कलंकिनी तक कहा गया।

आधुनिक समझे जाने वाले पश्चिमी देशों के विद्वान भी औरत को पुरुष के बराबर दर्जा देने का हौंसला नहीं कर पाए। अरस्तु ने पुरुष को सुपीरियर तथा औरत को इन्फीरियर माना। जे. गोथ को स्त्री में नूर नज़र नहीं आया। उसने डंके की चोट पर कह दिया कि स्त्री में नूर नहीं होता। शेक्सपियर का मानना है कि कमजोरी का दूसरा नाम स्त्री है। मनु का फैसला है— स्त्री अज्ञान एवं झूठ की मूर्त है। कुछ धर्म-पुस्तकों में नारी को माया-सर्पनी एवं बाघिन तक कहा गया है। गोस्वामी तुलसीदास ने नारी का दर्जा पशु और गँवार से ऊँचा नहीं माना :

ढोर, गँवार, शूद्र, पसु, नारी।
सकल ताड़न के अधिकारी।

इसी मध्य काल में स्त्री के हक एवं सम्मान में नारा बुलंद किया महान समन्वयकारी, सभी में अकाल पुरख वाहिगुरु की ज्योति पहचानने वाले, सिक्ख धर्म के प्रवर्तक श्री गुरु नानक देव जी ने। उन्होंने अपनी की बाणी 'आसा की वार' में स्पष्ट लिखा है कि नारी को पुरुष से निम्न समझना, यह सिद्धांत मूलत: गलत है। केवल अकाल पुरख को छोड़ कर समस्त रचना स्त्री से ही सम्भव है। इस संदर्भ में उनका पावन शबद यहां उल्लेखनीय है :

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥
भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥
भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥
जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि ॥
नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ॥

(पन्ना ४७३)

श्री गुरु नानक देव जी की पावन बाणी के अनुसार स्त्री से व्यक्ति जन्म लेता है। स्त्री से ही

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

जीव के शरीर की रचना होती है। स्त्री के माध्यम से ही सभी सम्बध बनते हैं और स्त्री से ही जगत-उत्पत्ति का मार्ग चलता है। स्त्री के मर जाने पर पुन: अन्य स्त्री की खोज शुरू हो जाती है और स्त्री से ही अन्य सबके साथ सम्बंध स्थापित होते हैं। स्त्री को भला-बुरा अर्थात् निम्न क्यों कहा जाए जिसने बड़े-बड़े राजाओं-महाराजाओं को जन्म दिया है? स्त्री से ही स्त्री उत्पन्न होती है और संसार में कोई भी जीव स्त्री के बिना पैदा नहीं हो सकता। केवल एक ईश्वर ही है जो स्त्री से उत्पन्न न होकर स्वयं प्रकाशमान है। जो अपने मुख से सदैव प्रभु के गुण गाता है उसका भाग्य बहुत उज्जवल होता है। हे नानक! प्रभु का गुणगान करने वाला मुख ही सच्चे प्रभु के दरबार में सुंदर लगता है।

सर्वधर्म समन्वय के परम उद्देश्य से विरचित पावन ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन बाणी में कितनी ही तुकें (पंक्तियाँ) ऐसी हैं जो स्त्री-पुरुष सबंध की द्योतक हैं। यही नहीं, गुरबाणी में स्त्री को विशेष सम्मान देते हुए उसे कुछ विशिष्ट गुणों की मालकिन कहा गया है, जो उसे प्राकृतिक रूप से मिले हैं व जिनकी बदौलत स्त्री आध्यात्मिक मार्ग में पुरुष की मार्गदर्शक मानी गई है।

संस्कृत में एक उक्ति है— ''गुणा पूजा स्थानम न च लिंग न च वयं।'' अर्थात् सर्वत्र गुणों की पूजा होती है, लिंग या आयु के कारण नहीं। इस संदर्भ में नारी के कुछ विशिष्ट गुण, जैसे— दया, संतोष, सहज, क्षमा, मधुरता, विनम्रता आदि वर्णनीय हैं, जिनके कारण वह पति-प्रेम प्राप्त करती है और वास्तव में यही गुण हैं जिनसे प्रियतम-प्रभु को पाया जा सकता है। ये गुण स्त्री में पहले से ही मौजूद हैं जबकि पुरुष को इन गुणों का धारक होने हेतु विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। तब स्त्री ही पुरुष की मार्गदर्शिका बनती है। गुरबाणी-प्रमाण है:

जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणी॥
सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी॥
पिरु रीसालू ता मिलै जा गुर का सबदु सुणी॥

(पन्ना १७)

अर्थात् हे सतसंगी बहनो! बेशक जाकर किसी सुहागिन (जिसने प्रभु को पा लिया है) से पूछ लो कि तुमने किन गुणों से प्रभु-मिलाप प्राप्त किया है। यही मालूम होगा कि उन्होंने स्थिर, संतुष्ट एवं मधुर वाणी से अपने जीवन का शृंगार किया है। आनंददायक प्रभु रूपी पति तभी मिलता है जब गुरु के उपदेश को ध्यानपूर्वक सुना जाए। इस संदर्भ में बाबा शेख फरीद जी का पावन शबद है :

निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु॥
ए त्रै भैणे वेस करि तां वसि आवी कंतु॥

(पन्ना १३८४)

अर्थात् हे बहन! झुकना अक्षर है, सहना गुण है, मीठा बोलना शिरोमणि मंत्र है। यदि ये तीन वेश धारण कर ले तो प्रियतम प्रभु तेरे वश में आ जायेगा।

गुरबाणी के पावन सिद्धांत के अनुसार पूरे ब्रह्मांड में जितने भी जीव हैं चाहे पुरुष रूप में हैं या स्त्री रूप में, वे सभी जीव-स्त्रियां हैं। पुरुष तो केवल परमात्मा ही है। गुरबाणी में जीवात्मा तथा परमात्मा का सम्बंध बहुतायत से स्त्री-पुरुष रूपाकार में ही बताया गया है। इस प्रकार जीवात्मा रूपी स्त्री को परमात्मा रूपी पति को पाने हेतु जिन गुणों की आवश्यकता होती है वे गुण स्त्री में

बहुतायत में पहले से ही मौजूद हैं। जीवात्मा रूपी स्त्री के गुण बयां करते हुए पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि केवल प्रभु की भक्ति वह शीलवान नारी है जिसका रूप अनुपम है और जिसका आचरण पूर्ण है। भक्ति रूपी स्त्री जिस घर में आन बसती है वह घर शोभा से युक्त हो जाता है। ऐसी नारी गुरमुख बने किसी विरले व्यक्ति को ही प्राप्त होती है :

निज भगती सीलवंती नारि॥
रूपि अनूप पूरी आचारि॥
जितु ग्रिहि वसै सो ग्रिहु सोभावंता॥
गुरमुखि पाई किनै विरलै जंता॥ *(पन्ना ३७०)*

आगे श्री गुरु अरजन देव जी ने भक्ति रूपी स्त्री को सारे परिवार में श्रेष्ठ माना है :

सभ परवारै माहि सरेसट॥
मती देवी देवर जेसट॥
धंनु सु ग्रिहु जितु प्रगटी आइ॥
जन नानक सुखे सुखि विहाइ॥ *(पन्ना ३७१)*

अर्थात् सम्पूर्ण आध्यात्मिक परिवार में स्त्री सर्वश्रेष्ठ है तथा देवर, जेठ रूपी इन्द्रियों को सही परामर्श देने वाली है। गुरु पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि वह हृदय रूपी घर भाग्यशाली है जिस घर में यह भक्ति रूपी स्त्री आकर प्रकट होती है।

यही नहीं, गुरबाणी में ऐसी स्त्री को 'बतीह सुलखणी' अर्थात् बत्तीस गुणों को धारण करने वाली सर्वगुण-सम्पन्न माना गया है। इन गुणों की धारक स्त्री को आशीष प्रदान करते हैं कि वह मायके तथा ससुराल में सदैव सुखी बसे :

पेईअड़ै सहु सेवि तूं साहुरड़ै सुखि वसु॥
गुर मिलि चजु अचारु सिखु तुधु कदे न लगै दुखु॥
(पन्ना ५०)

अब विचारणीय तथ्य यह है कि गुरु साहिबान द्वारा चलाई गई यह नारी चेतना संगत तथा पंगत द्वारा दिया गया समता-भाव एवं नारी के सम्मान में बुलंद किये गये नारे— *''सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान॥''* वाला मान-सम्मान और शिक्षा सारी दुनिया के लिए अनुकरणीय है। विशेष तौर पर आज सिक्ख नारी को आत्म-चिन्तन की बहुत आवश्यकता है। शायद वह स्वयं को मिले मान-सम्मान एवं गौरव को विस्मृत कर कहीं न कहीं मार्ग से भटक रही है।

इस संदर्भ में मानवीय मूल्यों वाले भारत देश में मादा (कन्या)-भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध, पुत्र-मोह, दहेज-प्रथा जैसी कुरीतियां आज भी समाज में देखने को मिलती हैं। हम क्यों भूल जाते हैं गुरु साहिबान के हम पर किये गए उपकार को? वैसे भी जीवन में संतुलन अति आवश्यक है, क्योंकि संतुलन बिगड़ते ही दुर्घटनाएं घटित होती हैं। आश्चर्यजनक पहलू है कि कन्या-भ्रूण हत्या ऐसा अभिशाप है जो मनुष्य द्वारा किया जाता है।

कई बार ऐसा प्रतीत होता है कि कहीं न कहीं दहेज जैसी कुप्रथा तथा पुत्र-मोह से वंश परंपरा जैसी कुरीतियों एवं गलतफहमी के हम सब शिकार हैं। इस सन्दर्भ में अपनी कविता की कुछ पंक्तियां सुहृदयी पाठकों के समक्ष रखना चाहूंगी ताकि हम सब अपने-अपने गिरेबान में झांक सके कि कहीं जाने-अनजाने में इन कुप्रथाओं से हम ग्रसित तो नहीं हैं :

दहेज लानत है समाज पर, भेंट हमें स्वीकार तो है।

बेटा-बेटी एक समान हैं पर, बेटे का सत्कार तो है। बेटे से वंश चलता है और वंश से सबको प्यार तो है।

बाबा शेख फरीद जी की बाणी इस संदर्भ में हमारा मार्गदर्शन करती है। बाबा शेख फरीद जी का पावन फरमान है कि हे इंसान! अगर तू सचमुच समझदार है तो तू नेक कर्म कर! पाप-कर्म करके अपना दुर्भाग्य मत लिख! तू दूसरों के गुनाह देखने की आदत छोड़कर अपने गिरेबान में झाँक कर देख, तेरे अपने कर्म कैसे हैं :

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख॥
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नीवां करि देखु॥

(पन्ना १३७८)

गुरबाणी आशयानुसार जीवन बना कर हमें गर्व होना चाहिए स्वयं के नारी होने पर और फिर बेटी की माँ होने पर। साथ ही बेटी की इस तरह परवरिश होनी चाहिए कि उसे भी गर्व हो बेटी होने पर। जब वह ससुराल-घर जाए तो उसे गुरमत अनुसार संस्कारों का 'दहेज' देकर भेजें, जैसा कि श्री गुरु रामदास जी का पावन निर्देश है :

हरि प्रभु मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो॥
हरि कपड़ो हरि सोभा देवहु जितु सवरै मेरा काजो॥

(पन्ना ७८)

अर्थात् हे मेरे पिता! मुझे हरि-प्रभु के नाम का दान रूपी दहेज दो। मुझे हरि-नाम रूपी कपड़े दो और हरि-नाम रूपी गहने, धन आदि दो, जिसके फलस्वरूप मेरा विवाह-कार्य सफल और सुंदर बन जाए।

जब कोई बेटी इस तरह का दहेज अपने मायके से लेकर ससुराल-घर जायेगी तो ससुराल वाले गर्व करेंगे अपनी बहू पर। तुम्हारी साधना उस दिन सफल समझना जब बेटी की सास ईश्वर के चरणों में यह अरदास करे कि हे वाहिगुरु जीओ! मुझे मेरी बहू जैसी संस्कारी पोती देना।

गुरबाणी आशयानुसार चलने से हृदय रूपान्तरित हो जाता है। ऐसे में कन्या-भ्रूण हत्या, दहेज-प्रथा आदि कुरीतियां स्वत: समाप्त हो जाती हैं।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आठ मार्च यू. एन. ओ. द्वारा एक दिन ऐसा निश्चित किया गया है जब विश्व स्तर पर महिला वर्ग का सम्मान किया जाता है। यह विश्वव्यापी रिवायत सन् १९७३ में प्रारम्भ हुई और वह भी अमेरिका जैसे विकसित देश की महिलाओं की मशक्कत, विरोध और अनेक प्रकार के प्रदर्शनों के उपरान्त।

वर्तमान में आवश्यकता है ह्रास होती भारतीय संस्कृति और विघटित होते मानव मूल्यों की पुन: स्थापना हेतु स्त्री जाति अपने कर्त्तव्य को पहचाने तथा अपने दायित्वों का पूर्णतया निवर्हन करते हुए श्री गुरु नानक देव जी से मिले आशीर्वाद एवं मान-सम्मान की सुगंध सर्वत्र बिखेरती रहे। केवल आठ मार्च को ही नहीं, वह अपने नेक कर्मों, सुसंस्कारों, नेक नियति से ३६५ दिन ही स्वयं को गुरु-कृपा की पात्र बन कर, हँसते-हँसते, बाखूबी अपना दायित्व निभाते हुए सम्मानित एवं गौरवान्वित अनुभव करे।

ख़बरनामा

बीबी जगीर कौर ने की सिक्ख बुद्धिजीवियों के साथ मीटिंग

श्री अमृतसर : ११ जनवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की स्थापना और गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर से सम्बन्धित इतिहास को समकालीन प्रकाशित पुस्तकों के आधार पर पुन: प्रकाशित किया जायेगा। इसके अलावा नवम पातशाह श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब के चार सौ वर्षीय प्रकाश दिवस और श्री ननकाणा साहिब के साके के एक सौ वर्षीय दिवस को समर्पित भी विशेष खोज-कार्य करवा कर प्रकाशित किये जाएंगे। यह जानकारी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की प्रधान बीबी जगीर कौर ने सिक्ख बुद्धिजीवियों के साथ हुई विशेष मीटिंग के बाद पत्रकारों के साथ बातचीत करते हुए दी।

बीबी जगीर कौर ने कहा कि सिक्ख बुद्धिजीवियों ने सिक्ख इतिहास से संबंधित प्राचीन पुस्तकों की पुनर्प्रकाशना और आ रहे शताब्दी दिवस से सम्बन्धित कीमती विचार दिए हैं, जिन्हें अमल में लाया जायेगा। उन्होंने यह भी बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से जो पुस्तकें प्रकाशित की जाएंगी, उन्हें डिजिटल रूप में वेबसाईट पर भी डाला जायेगा, जिससे यह सामग्री अधिक से अधिक पाठकों तक पहुंच सके। उन्होंने जानकारी दी कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की वेबसाईट को नये रूप में तैयार किया जा रहा है, जिस पर सिक्ख इतिहास से सम्बन्धित जानकारी के अलावा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सौ वर्षीय इतिहास को भी प्रकाशित किया जायेगा।

बीबी जगीर कौर ने बताया कि नवम् पातशाह के चार सौ वर्षीय प्रकाश दिवस को समर्पित सिक्ख नौजवानों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार करने के लिए केंद्र खोलने की योजना है। यह केंद्र आईएएस, आईपीएस, पीसीएस आदि परीक्षाओं के लिए सिक्ख विद्यार्थियों को तैयार करेगा। उन्होंने बताया कि इस सम्बन्ध में योगदान देने के लिए कई सिक्खों ने पेशकश की है और जल्द ही इस बारे में अंतिम निर्णय लिया जायेगा। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि प्रचारक और रागी सिंघ तैयार करने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा संचालित धार्मिक संस्थाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को धार्मिक पाठ्यक्रमों के साथ-साथ स्नातक और परास्नातक की पढ़ाई करवाई जायेगी। इसके अलावा विभिन्न यूनिवर्सिटियों के सिक्ख खोजार्थियों को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी रिफ्रेशर कोर्स करवा कर देश-विदेश में सिक्खी प्रचार के लिए भी भेजेगी।

यूएपीए का दुरुपयोग भाजपा सरकार के तानाशाही रवैये का प्रकटावा : बीबी जगीर कौर

श्री अमृतसर : १६ जनवरी : किसानी को तबाह करने वाले काले कानूनों के ख़िलाफ़ संघर्ष कर रहे किसानों की आवाज़ को दबाने के लिए भारत की भाजपा सरकार द्वारा घटिया हथकंडे इस्तेमाल

करने की शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की प्रधान बीबी जगीर कौर ने सख़्त शब्दों में निंदा की है। बीबी जगीर कौर ने कहा कि किसानी संघर्ष के साथ जुड़े लोगों की आवाज़ को दबाने के लिए यूएपीए कानून का दुरुपयोग करते हुए किसानों और किसानी संघर्ष के साथ जुड़े लोगों को एनआईए की तरफ से नोटिस जारी करना केंद्र सरकार की तानाशाही नीति का प्रकटावा है। उन्होंने कहा कि देश के किसान अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं, परंतु देश की सरकार हक और सच की आवाज़ को दबाने के लिए सरकारी तंत्र का दुरुपयोग कर रही है, जो असहनीय है। बीबी जगीर कौर ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी से सवाल किया कि यदि कोई अपने साथ हो रहे अन्याय का विरोध करे तो क्या वह देशद्रोही है ? क्या अपनी आने वाली पीढ़ी के लोगों के लिए चिंता करना और अपने हक की रक्षा के लिए संघर्ष करना देश को तोड़ने वाली कार्यवाही है ?

उन्होंने कहा कि मोदी सरकार किसानों की माँगों को स्वीकार करने के लिए संजीदगी के साथ विचार करने की बजाय अपने अहंकार से लोकतंत्र का हनन कर रही है। खासकर अल्पसंख्यकों के प्रति देश की सरकार का रवैया उन्हें दबाने वाला है। सरकार की मंशा लोगों के हितों की रक्षा करने वाली होनी चाहिए। बीबी जगीर कौर ने कहा कि किसानी संघर्ष पूर्ण शांतमयी ढंग से चल रहा है, परंतु भाजपा सरकार अपने प्रभाव से इसे जानबूझ कर गलत रंगत देने के यत्न में लगी है। सरकार लोगों की भावनाओं को भड़काने के लिए हर प्रयास कर रही है। इसी का ही हिस्सा है कि एनआईए के द्वारा यूएपीए के अंतर्गत किसानी संघर्ष पर वार किया गया है। उन्होंने कहा कि सरकार का यह रवैया साबित करता है कि देश की भाजपा सरकार तानाशाह बन चुकी है जो भारत के संविधान के लिए बड़ा ख़तरा है।

सिक्ख टीवी एंकर को धमकी मिलने का मामला
बीबी जगीर कौर ने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री को लिखा खत

श्री अमृतसर : २२ जनवरी : पाकिस्तान में सिक्ख टीवी एंकर स. हरमीत सिंघ को धमकियां मिलने का नोटिस लेते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की प्रधान बीबी जगीर कौर ने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री जनाब इमरान ख़ान और पश्चिमी पंजाब के गवर्नर चौधरी मुहम्मद सरवर को खत लिखकर इस मामले में दख़ल देने की अपील की है। बीबी जगीर कौर ने अपने खत में लिखा है कि मीडिया रिपोर्टों के माध्यम से पाकिस्तान के पहले दसतारधारी सिक्ख टीवी एंकर स. हरमीत सिंघ को पेशावर जेल में से फ़ोन पर धमकी मिली है, जो दुर्भाग्यपूर्ण बात है। बीबी जगीर कौर ने कहा कि पाकिस्तान में सिक्ख अल्प संख्या में हैं और सरकार का फ़र्ज़ बनता है कि वह सिक्खों की

सुरक्षा को यकीनी बनाए। उन्होंने कहा कि पहले स. हरमीत सिंघ के भाई का बीते समय कत्ल कर दिया गया था और अब इसे भी धमकियां मिल रही हैं। उन्होंने कहा कि सिक्ख एंकर स. हरमीत सिंघ के साथ न्याय किया जाये और इसकी सुरक्षा को यकीनी बनाया जाये।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की हाकी अकादमी को हाकी इंडिया की तरफ से मिली मान्यता

श्री अमृतसर : २३ जनवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा चलाई जा रही हाकी अकादमी को हाकी इंडिया की तरफ से मान्यता प्राप्त हुई है। यह मान्यता हाकी इंडिया के कार्यकारी बोर्ड की तरफ से १९ जनवरी, २०२१ ई. को हुई बैठक के दौरान दी गई। इस पर ख़ुशी प्रकट करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की प्रधान बीबी जगीर कौर ने हाकी इंडिया का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से हाकी अकादमी सफलता के साथ चलाई जा रही है और अब इसे हाकी इंडिया की तरफ से मान्यता मिलने पर यह सीधा नेशनल चैंपियनशिप में भाग ले सकेगी। बीबी जगीर कौर ने इंटरनेशनल हाकी फेडरेशन के प्रधान श्री नरेन्द्र बत्रा, हाकी इंडिया के सचिव स. रजिंदर सिंघ और कमांडर श्री आर. के. श्रीवास्तव का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से भविष्य में हाकी अकादमी का और भी विस्तार किया जायेगा।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से अमृतधारी विद्यार्थियों को १ करोड़ ३१ लाख रुपए की वज़ीफ़ा राशि वितरित

श्री अमृतसर : ३० जनवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रबंध अधीन चल रहे शैक्षणिक अदारों के अमृतधारी विद्यार्थियों को १ करोड़, ३१ लाख रुपए की वज़ीफ़ा राशि वितरित की गई। गुरुद्वारा श्री मँजी साहिब दीवान हाल में किये गए एक प्रभावशाली समागम के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की प्रधान बीबी जगीर कौर ने २६३६ विद्यार्थियों को शैक्षणिक सत्र २०२०-२०२१ के लिए ये वज़ीफ़े प्रदान किये। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से लिये गए निर्णयानुसार कक्षा छठी से दसवीं तक ३५०० रुपए, कक्षा ग्यारहवीं से बारहवीं तक ५००० रुपए, स्नातक स्तर के लिए ८००० रुपए और परास्नातक के लिए १०००० रुपए की वज़ीफ़ा राशि हर साल दी जाती है।

महान सिक्ख जरनैल अकाली फूला सिंघ

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2020-22 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2020-22

GURMAT GYAN

March 2021

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

सिक्ख जरनैल सरदार बघेल सिंघ
जिन्होंने दिल्ली फतह कर लाल किले पर खालसाई निशान साहिब फहराया

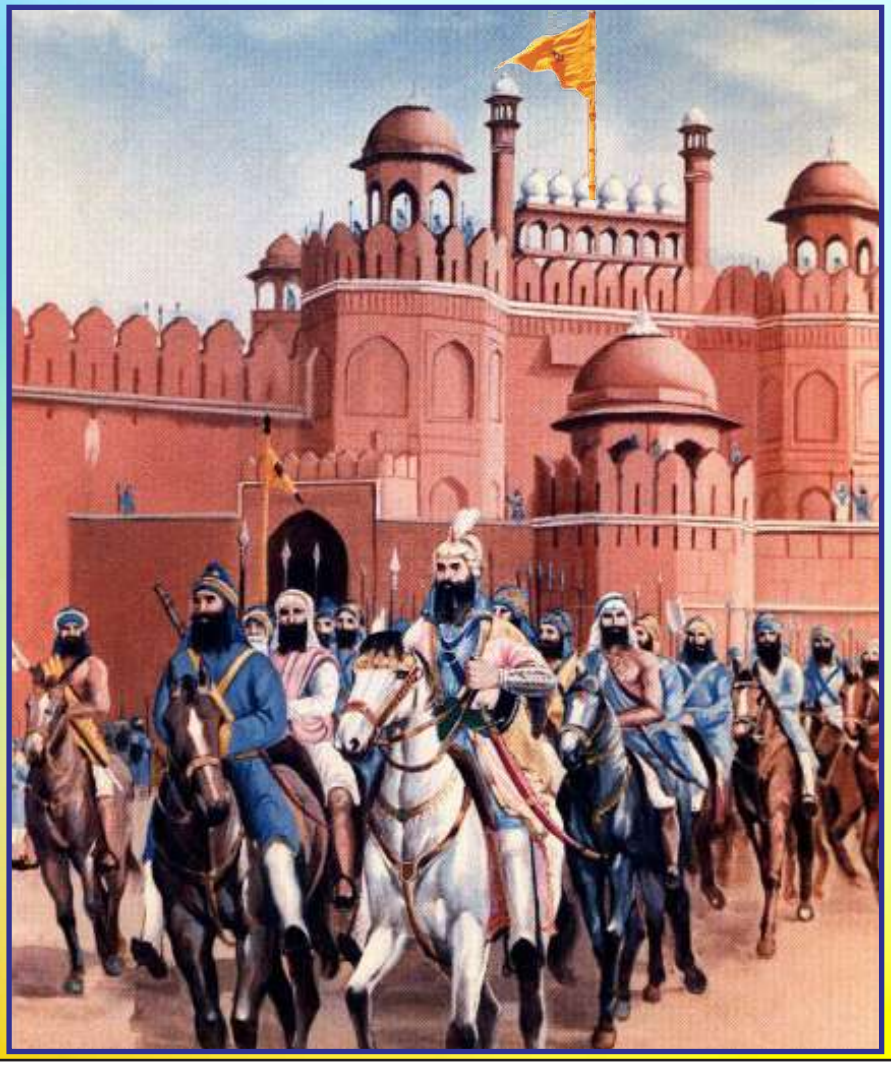

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar. Editor : Satwinder Singh

Date: 1-3-2021